

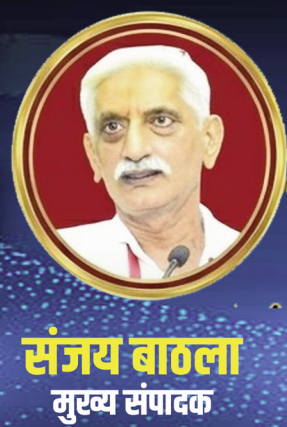
परिवहन विशेष समाचार पत्र को जिस तरह आप लोगों के सहयोग लगातार पिछले 3 वर्षों से प्राप्त हुआ और दिन प्रतिदिन आपकी आवाज को आगे पहुँचाने में आपका सहयोगी बना उसको देखते हुए परिवहन विशेष समाचार पत्र के प्रबंधक मंडल और ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड कंपनी द्वारा जनहित, जनकल्याण जनसूचना और जानकारी को और तेजी से भारत सरकार और राज्य सरकारों के साथ सभी राजनीतिक संगठनों को सबसे पहले पहुँचाने के उद्देश्य से अक्टूबर माह से जनता की आवाज का अपना चैनल "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" शुरू करने का निर्णय लिया है।

जल्द आपके बीच में....

परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन

बड़ी खुशखबरी! अब आपकी आवाज गुंजेगी पूरी दुनिया में परिवहन विशेष समाचार पत्र के सफल 3 वर्षों के बाद अब नई क्रांति

आशा करते हैं जैसे आपने आज के इस दौर में "परिवहन विशेष समाचार पत्रों" को इतना आगे ले कर जाने में सहयोग दिया उसी प्रकार हमारे द्वारा आपकी आवाज बनने के लिए शुरू किए जा रहे "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" को विश्व का सबसे बड़ा चैनल बनवाएंगे।

संजय बाठला
मुख्य संपादक

समान काम, समान वेतन की बदलती कसौटी: सुप्रीम कोर्ट के नए मानदंड का विश्लेषण

विशेष संपादकीय रिपोर्ट, प्रस्तुतकर्ता
पिकी कुड्डू सामाजिक परामर्शदाता
परिवहन विशेष समाचार पत्र

प्रस्तावना: समानता का नया चश्मा सदी बदल गई है, लेकिन समानता का सवाल आज भी प्रासंगिक है। सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में जी.पी. संगीता एवं अन्य बनाम केरल राज्य एवं अन्य [2026 LiveLaw (SC) 948 | 2026 INSC 1004, निर्णय दिनांक 08 सितम्बर 2026] में स्पष्ट किया है कि "समान काम" का तथ्य अपने आप में "समान वेतन" का संवैधानिक अधिकार पैदा नहीं करता। जस्टिस दीपांकर दत्ता और जस्टिस शील नागू की पीठ ने कहा - "Mere functional similarity of work is no longer enough" और "Equal pay must be for equal work of equal value. The doctrine has no mechanical application. b832

1. **विवाद का तथ्यात्मक आधार - क्या था मामला ?**
- पद: हायर सेकेंडरी स्कूल टीचर (जूनियर) - HSST (Jr.) केरल के सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में।
- दो वर्ग:
1. 1998 के शासनादेश के तहत सीधे भर्ती हुए शिक्षक (Direct Recruits - 25% कोटा)

2. लोअर स्कूल से पदोन्नति / स्थानांतरण द्वारा आए शिक्षक (Promotee/Transferee)

- मांग: सीधे भर्ती शिक्षकों ने तर्क दिया कि पदनाम, पाठ्यक्रम, कक्षा, जिम्मेदारी समान होने पर वेतनमान अलग क्यों? उन्हें भी पूर्णकालिक वेतनमान और भत्ते मिलें।
- केरल हाईकोर्ट की खंडपीठ ने राज्य की अपील स्वीकार कर वेतन-अंतर को वैध ठहराया था, जिसे सुप्रीम कोर्ट ने बरकरार रखा। fb99

2. **संवैधानिक प्रावधान - अधिकार कहाँ से आते हैं ?**

- अनुच्छेद 14: विधि के समक्ष समानता और विधियों का समान संरक्षण। मनमाने वर्गीकरण पर रोक।
- अनुच्छेद 16: लोक नियोजन में अवसर की समानता।
- अनुच्छेद 39(घ): राज्य नीति के निदेशक तत्व - पुरुष और स्त्री दोनों को समान कार्य के लिए समान वेतन। यह मूल अधिकार नहीं, पर अनुच्छेद 14 और 16 के साथ पढ़कर न्यायालयों ने इसे सामाजिक न्याय का औजार बनाया।

- अनुच्छेद 21: गरिमापूर्ण जीवन - असमान वेतन को कई फैसलों में इसी का उल्लंघन माना गया था।
3. **न्यायिक विकास - यात्रा: उदार से कठोर कसौटी तक**
सुप्रीम कोर्ट ने फैसले में पूर्व मिसालों



का विस्तृत हवाला दिया:
- रणधीर सिंह बनाम भारत संघ (1982): समान काम समान वेतन को अनुच्छेद 14, 16, 39(घ) से जोड़ा, शोषण के विरुद्ध सुरक्षा।
- एम.आर. गणेश बाबू मामला: "समान वेतन केवल काम की मात्रा से नहीं, कार्य की प्रकृति, विश्वसनीयता और जिम्मेदारी की गुणात्मक भिन्नता से तय होगा। प्रशासन का सद्भावपूर्ण मूल्य-निर्णय

यदि तर्कसंगत है तो न्यायिक हस्तक्षेप नहीं।"
- बिहार सेकेंडरी टीचर्स स्ट्रगल कमेटी (2019): नियुक्ति स्रोत, योग्यता में अंतर वेतन-भेद का वैध आधार हो सकता है।
- कलकत्ता हाईकोर्ट का अनिर्बान घोष मामला: जिस पर याचिकाकर्ताओं ने भरोसा किया, सुप्रीम कोर्ट ने कहा - बाध्यकारी मिसालों पर विचार न करने के कारण यह निर्णय per incuriam है, और SLP

खारिज होना उसकी पुष्टि नहीं करता। 98c7b832
नई कसौटी: वेतन-समानता का दावा करने वाले को स्थापित करना होगा -
> भर्ती का स्रोत + शैक्षणिक योग्यता + अनुभव - नियुक्ति का तरीका + जिम्मेदारी/जवाबदेही की प्रकृति में पूर्ण समानता fb99
4. इस मामले में अंतर क्यों वैध माना गया ?

कोर्ट ने माना कि पदोन्नत/स्थानांतरित शिक्षक पहले से स्थायी, पूर्णकालिक लोअर स्कूल शिक्षक थे। उनका लंबी पूर्व सेवा, अर्जित वरिष्ठता और संस्थागत ज्ञान एक "valid and intelligible differentia having a rational nexus with the object" है। उनका उच्च वेतन केवल नए पद का नहीं, बल्कि पूर्व सेवा की निरंतरता का संरक्षण है। b832
5. **राजपत्रित अधिसूचना और सेवा नियमों का संदर्भ**
- केरल शिक्षा नियम (KER) अध्याय XXXII: 1998 के शासनादेश G.O.(P) No. 13/98/GI.Edn. के तहत HSST संवर्ग का सुजन और 25% सीधी भर्ती का प्रावधान।
- केन्द्र: समान काम समान वेतन पर श्रम मंत्रालय का उत्तर - ठेका श्रम (विनियमन और उत्पादन) केन्द्रीय नियम, 1971 का नियम 25(2)(v)(a) समान/समान प्रकार के काम पर प्रधान नियुक्ता के समान वेतन, अवकाश, कार्य-घंटे का प्रावधान करता है।
- 7वें केन्द्रीय वेतन आयोग और राज्य वेतन आयोग: योग्यता और अनुभव को पे-मैट्रिक्स में वर्गीकरण का आधार मानते हैं।
6. **राज्य सरकारों के लिए निहितार्थ**
यह फैसला समानता के सिद्धांत को

खत्म नहीं करता, बल्कि उसे व्यापक बनाता है। इसका संदेश द्विपक्षीय है:
सरकारों/विभागों के लिए:
- वेतन-भेद का आधार सेवा-नियमों में स्पष्ट, पारदर्शी और तर्कसंगत रूप से दर्ज हो।
- अनुभव की गणना, योग्यता का औचित्य और भर्ती-स्रोत का वेतन पर प्रभाव अधिसूचित हो।
कर्मचारियों के लिए:
- केवल दैनिक कार्य की समानता पर्याप्त नहीं। समान भर्ती प्रक्रिया, समान योग्यता, समान अनुभव और समान सेवा-शर्तों में वास्तविक समानता सिद्ध करनी होगी।
निष्कर्ष: समानता का अर्थ एकरूपता नहीं अनुच्छेद 14 उचित वर्गीकरण की अनुमति देता है। समान परिस्थितियों में बिना उचित कारण अलग व्यवहार न हो, यही समानता है - हर परिस्थिति में हर कर्मचारी को समान वेतन देना नहीं। सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी भविष्य के सेवा-विवादों में मील का पत्थर बनेगी। यह प्रशासन को स्पष्ट नियम बनाने और कर्मचारियों को अपने दावे को तथ्यों से पुष्ट करने का संतुलित निर्देश है। समान काम समान वेतन का मूल्य आज भी जीवित है, पर उसकी कसौटी अब अधिक बारीक, अधिक संदर्भपूर्ण और अधिक न्यायसंगत हो गई है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com



पिकी कुड्डू

आज का साइबर सुरक्षा विचार ऑनलाइन शॉपिंग और बैंकिंग में सतर्कता जरूरी, OTP-CVV-PIN साझा करने से बचें



"क्लिक समझदारी से करें, बैंकिंग सुरक्षित रखें - जरूरी सावधानियाँ जो सबको जाननी चाहिए। भुगतान से पहले सोचें - ऑनलाइन सुरक्षा सबसे पहले!"

सुरक्षित ऑनलाइन शॉपिंग और बैंकिंग के लिए सतर्कता जरूरी है: हमेशा भरोसेमंद ब्रांड से खरीदारी करें, सुरक्षित वेबसाइट की पुष्टि करें (देखें कि URL https:// से शुरू हो और ब्राउज़र में ताले का चिह्न दिखे), और कभी भी संवेदनशील जानकारी जैसे CVV, OTP या PIN साझा न करें। अपने उपकरणों को सुरक्षित रखने के लिए नियमित रूप से एंटीवायरस और फ़ायरवॉल अपडेट करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

सुरक्षित ऑनलाइन शॉपिंग के लिए सावधानियाँ

- केवल भरोसेमंद ब्रांड/प्लेटफॉर्म से खरीदारी करें।
- वेबसाइट सुरक्षा जाँचें:
 - o URL हमेशा https:// से शुरू होना चाहिए।
 - o ब्राउज़र बार में ताले का चिह्न देखें।
- संवेदनशील जानकारी (CVV, OTP, ATM PIN, पासवर्ड) कभी साझा न करें।
- एंटीवायरस, फ़ायरवॉल, स्पैम फ़िल्टर आदि को नियमित रूप से अपडेट रखें।
- प्राइवेंसी पॉलिसी पढ़ें और समझें कि आपका डेटा कैसे इस्तेमाल होगा।
- ☞ **सुरक्षित बैंकिंग के लिए**

- सावधानियाँ**
- केवल बैंक की आधिकारिक वेबसाइट/ऐप का उपयोग करें।
 - फ़िशिंग ईमेल/SMS से सावधान रहें, प्रेषक की पुष्टि करें।
 - खाते की गतिविधि पर नज़र रखें, स्टेटमेंट और अलर्ट नियमित रूप से देखें।
 - मजबूत और यूनिक पासवर्ड रखें, जहाँ संभव हो 2FA सक्षम करें।
 - पब्लिक Wi-Fi पर बैंकिंग लेनदेन न करें।
 - जोरिखम और चेतावनी संकेत**
 - असुरक्षित वेबसाइट (https या

- ताले का चिह्न न होना) → डेटा चोरी का खतरा।
- बहुत आकर्षक ऑफ़र → अक्सर धोखाधड़ी।
 - एडवांस पेमेंट की माँग → सामान्य ठगी का तरीका।
 - ईमेल/SMS में अत्यधिक तात्कालिक भाषा → फ़िशिंग का संकेत।
 - कार्टवाई के कदम**
 - ऑनलाइन लेनदेन से पहले Axis Bank Safe Banking गाइडलाइन देखें।
 - संदिग्ध गतिविधि तुरंत रिपोर्ट करें:

- 1930 (राष्ट्रीय साइबर अपराध हेल्पलाइन) या cybercrime.gov.in।
- परिवार के सदस्यों, विशेषकर वरिष्ठ नागरिकों और युवाओं को डिजिटल स्वच्छता के बारे में शिक्षित करें।
 - सुरक्षित शॉपिंग और बैंकिंग के लिए तकनीकी सुरक्षा (एन्क्रिप्शन, एंटीवायरस) और व्यक्तिगत सतर्कता (संवेदनशील डेटा साझा न करना, धोखाधड़ी पहचानना) दोनों जरूरी हैं।
 - इन सावधानियों का पालन करने से आपका पैसा और पहचान सुरक्षित रहती है।

अस्पतालों में लूट का नया फॉर्मूला - जब ₹11 का सामान ₹325 में बिकता है



महाराष्ट्र FDA के सर्वे ने खोली निजी अस्पतालों की बिलिंग की पोल, IAS तुकाराम मुंढे ने केंद्र से की मेडिकल कंज्यूमेबल्स के दामों पर लगाम लगाने की मांग

संजय कुमार बाठला मुख्य संपादक परिवहन विशेष समाचार पत्र

अस्पताल का बिल देखकर अक्सर मरीज के परिवार के पैरों तले जमीन खिसक जाती है। हम समझते हैं कि डॉक्टर की फीस, सर्जरी, ICU का खर्च ज्यादा होगा, पर क्या आपने कभी सोचा है कि बिल का सबसे महंगा हिस्सा वह है जो कभी अस्पताल तक पहुँचा ही नहीं? वह है एक साधारण सिरिज, एक IV सेट, एक कैथेटर का बढ़ा-चढ़ाकर लगाया गया दाम।

महाराष्ट्र FDA कमिशनर और वरिष्ठ IAS अधिकारी तुकाराम मुंढे ने इसी कड़वी सच्चाई पर से पदा उठाया है। जुलाई 2026 में मुंबई, पुणे और छत्रपति संभाजीनगर के लगभग 20 निजी अस्पतालों में FDA के सर्वे ने जो आंकड़े दिए, वे

चौकाने वाले ही नहीं, शर्मनाक भी हैं।
तथ्य क्या हैं? - लूट का गणित
मुंढे ने सोशल मीडिया पर और 10 अगस्त को केंद्र सरकार के डिपार्टमेंट ऑफ़ फार्मास्यूटिकल्स व NPPA को भेजे पत्र में जो उदाहरण दिए हैं: - IV इन्फ्यूजन सेट: अस्पताल की खरीद कीमत (Trade Price) - ₹11.05, मरीज से वसूला गया MRP - ₹325। अंतर - 2841% - सिरिज: खरीद कीमत - ₹6.75, MRP - ₹57.20। अंतर - 747% से ज्यादा - कैथेटर: खरीद कीमत - ₹29.41, MRP - ₹310। अंतर - 10.5 गुना - IV कैनुला: खरीद कीमत - ₹22.50, MRP - ₹424। अंतर - लगभग 19 गुना
यह सिर्फ मुनाफा नहीं, व्यवस्था की खामी है
1. मरीज के पास कोई विकल्प नहीं: मुंढे ने सबसे सटीक बात कही है - रथे ऐसी चीज़ें नहीं हैं जिन्हें मरीज अपनी मर्जी से चुनकर खरीदता है। इलाज के

दौरान मरीज न तो कीमतों की तुलना कर सकता है, न दूसरा विकल्प ढूँढ सकता है। हर बीमार व्यक्ति सबसे कमजोर स्थिति में होता है और जानकारी का यही गैप उसकी जेब पर भारी पड़ता है।
2. नियमन का अंधा मोड़: देश में दवाओं की कीमतों के लिए DPCO 2013 और NPPA है, जिसने कोरोना में स्टेट, नि-इम्प्लॉट, ऑक्सीजन कंसंट्रेटर पर कैप लगाई थी। लेकिन 90% से ज्यादा सर्जिकल कंज्यूमेबल्स आज भी किसी भी प्राइस कैपिंग से बाहर हैं। IMRP निर्माता और डिस्ट्रीब्यूटर मनमाने ढंग से तय करते हैं।
3. पारदर्शिता का संकट: सवाल सिर्फ कीमत का नहीं, भरोसे का है। जब 6.75 की चीज पर ₹57.20 का ठप्पा लगाकर बिल में जोड़ा जाता है, तो यह स्वास्थ्य सेवा नहीं, मजबूती का व्यापार बन जाता है।
मुंढे की मांग क्या है?
1. सभी सर्जिकल कंज्यूमेबल्स को DPCO के दायरे में लाया जाए।
2. ट्रेड प्राइस और MRP के बीच अधिकतम स्वीकार्य मार्जिन

के लिए स्पष्ट गाइडलाइन तय हो।
3. अस्पतालों के बिल में हर आइटम की खरीद कीमत और MRP अलग-अलग दिखाना अनिवार्य हो।
जनता से सवाल - अपनी राय दीजिए
यह मुद्दा हर परिवार से जुड़ा है। आज नहीं तो कल हम सभी को अस्पताल जाना पड़ सकता है।
आपका क्या मानना है?
1. क्या अस्पतालों में इस्तेमाल होने वाले हर मेडिकल सामान पर सरकार को अधिकतम मार्जिन तय करना चाहिए?
2. क्या अस्पताल के बिल में हर सामान की असली कीमत लिखना अनिवार्य होना चाहिए?
3. क्या आपने भी कभी अस्पताल के बिल में ऐसी बड़ी हुई कीमतों का सामना किया है? अपनी राय, अनुभव और सुझाव हमें WhatsApp / पत्र / ईमेल के माध्यम से भेजें। चयनित प्रतिक्रियाएं हमारे रविवारीय विशेष अंक 'जनता की अदालत' में प्रकाशित की जाएंगी।

धर्म अध्यात्म



राधा अष्टमी पर भव्य जन्मोत्सव, पंचामृत अभिषेक और छप्पन भोग से सजी झांकी

शिव अरुण डालमिया व ऋतु डालमिया ने कहा— राधारानी की भक्ति से जीवन में सुख-शांति और आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार

रिपोर्ट विशेष संवाददाता
परिवहन विशेष समाचार पत्र
दैनिक गयाजी

भगवान श्रीकृष्ण की प्रिय राधा रानी का जन्मोत्सव शनिवार को शहर में श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया गया। इसी क्रम में शहर के केपी रोड स्थित डालमिया आवास पर अरुण बेला में वृषभान दुलारी राधा रानी का जन्मोत्सव भव्य रूप से मनाया गया।

राधाष्टमी के अवसर पर विभिन्न योग-संयोगों के बीच राधा रानी का पंचामृत से अभिषेक किया गया। इसके साथ ही विशेष पालना और झांकी सजाई गई। भक्तों ने राधा रानी के चरणों के दर्शन कर पूजा-अर्चना की। कार्यक्रम का आयोजन उषा डालमिया, शिव अरुण डालमिया, ऋतु डालमिया और प्रिया डालमिया की देखरेख में किया गया।

मौके पर पुजारी ने बताया कि दूध, दही, घी और शहद से तैयार पंचामृत से राधा रानी का अभिषेक किया गया। इसके बाद उन्हें नवीन पोशाक और विशेष आभूषण धारण



कराए गए। राधा रानी को प्रिय पंजीरी, लड्डू, पेड़ा, परवल की मिठाई और मावे की बर्फी सहित विभिन्न व्यंजनों का भोग लगाया गया।

धूप-झांकी खुलने के बाद अधिवास पूजन किया गया और छप्पन भोग की झांकी सजाई गई। श्रृंगार आरती के बाद राधा रानी को कपड़े, फल, टॉफी सहित अन्य

सामग्री अर्पित की गई, जिसे बाद में भक्तों के बीच वितरित किया गया।

राधारानी के चरण दर्शन की विशेष परंपरा

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार द्वापर युग में माता लक्ष्मी ने राधा रानी के रूप में अवतार लिया था। मान्यता है कि जब वृषभान जी यज्ञ के लिए भूमि तैयार कर रहे थे, उसी दौरान

उन्हें जमीन से नवजात कन्या के रूप में राधा रानी प्राप्त हुई। उनका अवतरण भगवान श्रीकृष्ण के जन्म से पहले हुआ था।

राधाष्टमी के दिन राधा रानी के चरणों के दर्शन की विशेष परंपरा है। भक्त बाल स्वरूप में राधा रानी के दर्शन कर उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इस अवसर पर कई स्थानों

पर राधा-कृष्ण की लीलाओं का मंचन, धार्मिक कार्यक्रम और महोत्सव आयोजित किए जा रहे हैं। वहीं, सामाजिक संगठनों की ओर से गरीबों और जरूरतमंदों के बीच भोजन एवं वस्त्र का वितरण भी किया जा रहा है।

भक्तों का मानना है कि राधाष्टमी के दिन राधा रानी की

पूजा-अर्चना करने से जीवन में सुख-शांति और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती है। इस अवसर पर शेरघाटी विधायक उदय कुमार सिंह, बबीता सिंह, अतरी विधायक रोहित कुमार, मधु प्रिया, डॉ. पंकज कुमार गुप्ता, शुभा गुप्ता, राखी भदानी सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

वर्तमान समय में महापुरुषों के जीवन और उनके आदर्शों को नई पीढ़ी तक पहुंचाना अत्यंत आवश्यक है : डॉ. हर्ष मोहन भारद्वाज

राधाष्टमी एवं महर्षि दधीचि जयंती पर डॉ. हर्ष मोहन भारद्वाज ने दी हार्दिक शुभकामनाएं

रिपोर्ट राजेश सलूजा, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक हरियाणा हिसार

महर्षि दधीचि परमार्थ आश्रम ट्रस्ट बरवाला के चेयरमैन एवं हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग के पूर्व सदस्य डॉ. हर्ष मोहन भारद्वाज ने राधाष्टमी एवं महर्षि दधीचि जयंती के पावन अवसर पर प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं दीं। उन्होंने मां राधा रानी से सभी के जीवन में सुख, शांति, समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की।

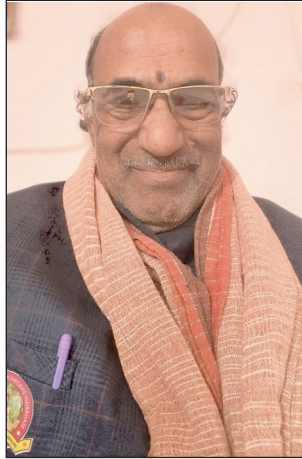
डॉ. हर्ष मोहन भारद्वाज ने कहा कि राधाष्टमी भारतीय संस्कृति और सनातन परंपरा में श्रद्धा, प्रेम, भक्ति एवं समर्पण का महत्वपूर्ण पर्व है। राधा रानी की भक्ति हमें निस्वार्थ प्रेम, करुणा और सेवा की भावना का संदेश देती है। ऐसे पावन अवसर हमें अपनी संस्कृति और संस्कारों से जुड़ने के साथ-साथ समाज में आपसी भाईचारे एवं सद्भाव को मजबूत करने की प्रेरणा देते हैं।

उन्होंने महर्षि दधीचि जी के त्याग और तपस्या को नमन करते हुए कहा कि उनका जीवन मानवता एवं परोपकार के लिए समर्पण की महान मिसाल है।

महर्षि दधीचि ने लोककल्याण के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर त्याग की ऐसी प्रेरणा प्रस्तुत की, जो युगों-युगों तक समाज का मार्गदर्शन करती रहेगी।

डॉ. भारद्वाज ने कहा कि वर्तमान समय में महापुरुषों के जीवन और उनके आदर्शों को नई पीढ़ी तक पहुंचाना अत्यंत आवश्यक है। महर्षि दधीचि के त्याग, तपस्या, सेवा और परोपकार की भावना को जीवन में अपनाकर समाज को अधिक संवेदनशील एवं संस्कारवान बनाया जा सकता है।

उन्होंने राधाष्टमी के अवसर पर मां राधा रानी से सभी परिवारों पर अपनी कृपा बनाए रखने तथा समाज में प्रेम, शांति, सद्भाव और भाईचारे की भावना मजबूत करने की प्रार्थना की। उन्होंने सभी नागरिकों को राधाष्टमी एवं महर्षि दधीचि जयंती की शुभकामनाएं देते हुए उनके सुखी एवं समृद्ध जीवन की मंगलकामना की।



लघु कथा, एक सत्य घटना पर आधारित जीवन का अंतिम सत्य, गुरु कृपा और परोपकार।

लेखक हरिओम वाजपेई, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

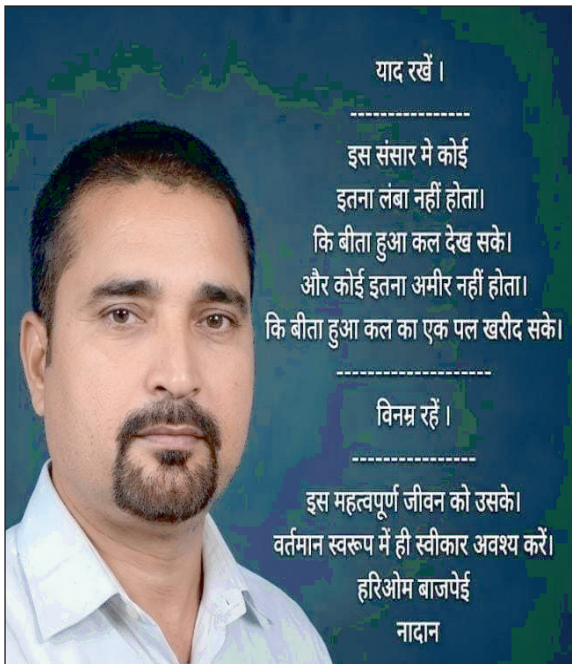
नादान – नादान शांत रहते थे।

लेकिन यह शांति किसी कमजोरी की नहीं, बल्कि उनके भीतर छिपी गहरी समझ और भक्ति भाव की प्रतीक थी। वे बहुधा संसार की आपाधापी, धन कमाने की अंधी होड़ और झूठे मान सम्मान की दौड़ से खुद को अलग रखकर केवल शांत भाव से सब देखते रहते थे। परंतु एक दिन, एक अत्यंत हृदय विदारक स्थिति उत्पन्न हुई। अपने एक सम्मानित परिचित परिवार के मासूम 34 वर्षीय बच्चे की तबीयत अचानक बहुत बिगड़ गई और उसे चिकित्सालय के आपात कालीन एवं गहन चिकित्सा में भर्ती कराना पड़ा।

बच्चे की गंभीर अवस्था देख उसका पूरा परिवार चिंता और निराशा में बुरी तरह डूब चुका था। चिकित्सालय के उस स्तब्ध कर देने वाले वातावरण में, रात के सन्नाटे में एकांत में बैठे हुए नादान अपने इष्ट गुरु महाराज के ध्यान में लीन हो गए। नादान अश्रु पूरित नेत्रों से गुरु महाराज से कातर भाव से प्रार्थना कर रहे थे। हे गुरुदेव! इस मासूम बच्चे का जीवन अब पूरी तरह आपके हाथों में है।

कृपा करके इसे जीवन दान दे दीजिए, इसे वापस लौटा दीजिए। इसका परिवार जो इसकी इस भयानक बीमारी से पूरी तरह टूट चुका है, उसे एक बार फिर से नया सपना देखने और जीने का अवसर मिल सके। यह केवल आपकी असीम कृपा से ही संभव है। प्रार्थना करते हुए जब नादान ने आसपास के वातावरण को निहार तो उन्हें संसार के परम सत्य का साक्षात्कार हुआ।

उन्होंने देखा कि नगर का एक अत्यंत धनवान व्यक्ति जिसके पास अकूत संपत्ति थी वह रो-रोकर चिकित्सकों के सामने हाथ जोड़ रहा था। यह नोटों से भरा बैग चिकित्सकों के चरणों में रखकर गिड़गिड़ा रहा था। मेरी सारी जायदाद ले लो मेरा सब कुछ नीलाम कर दो, बस मेरे बच्चे की थमती हुई साँसों को कुछ घंटे और दे दो! परंतु चिकित्सक विवश थे। नादान को यह समझ आते देर न लगी कि जिस धन दलित के पीछे



याद रखें।

इस संसार में कोई इतना लंबा नहीं होता। कि बीता हुआ कल देख सके। और कोई इतना अमीर नहीं होता। कि बीता हुआ कल का एक पल खरीद सके।

विनम्र रहे।

इस महत्वपूर्ण जीवन को उसका। वर्तमान स्वरूप में ही स्वीकार अवश्य करें। हरिओम वाजपेई नादान

इंसान पूरी जिंदगी भागता है, वह मृत्यु के द्वार पर आकर कितनी बेकार और असहाय हो जाती है।

कुछ ही दूरी पर एक निर्धन परिवार बैठा था, जो अपने स्वजन की हर एक चलती धड़कन के लिए ईश्वर का कोटि-कोटि धन्यवाद कर रहा था। वहीं दूसरी ओर, झूठे अहम् और संपत्ति के विवाद में बरसों से अलग हुए दो भाइयों में से जब एक की साँसें उखड़ने लगीं, तो दूसरा भाई गलियारे में सिर पटक-पटक कर अपने गँवाए हुए सालों पर पछता रहा था। चिकित्सालय की वे नीरव दीवारें मानो चीख-चीखकर यही पाठ पढ़ा रही थीं। हे मानव इस संसार में जीवन से बढ़कर कुछ भी नहीं है। न यह अकूत धन, न यह झुठा अहंकार, और न ही कोई आपसी कड़वाहट। जब तक शरीर में साँसें चल रही हैं, इससे बड़ी कोई दौलत नहीं है। जो मिला है, उसे अपनी के साथ प्रेम और मुस्कान से जी लो। रात ढलते-ढलते, नादान की सच्ची प्रार्थना और गुरु महाराज की असीम कृपा से चमत्कार हुआ। उस मासूम बच्चे की साँसें धीरे-धीरे स्थिर होने लगीं और उसके टूट चुके परिवार की आँखों में एक नया सपना देखने की आस और खुशी के आँसू छलक उठे। गुरु कृपा के इस प्रत्यक्ष

साक्ष्य और जीवन के नग्न सत्य को देखकर नादान का हृदय गदगद हो गया। उन्होंने बोध हो गया कि इस क्षणभंगुर संसार में धन, पद और अहंकार सब यहीं धरा का धरा रह जाएगा। यदि इस मानव जीवन का कोई वास्तविक अर्थ है, तो वह केवल गुरु कृपा, परोपकार, निस्वार्थ सेवा और प्रेम ही है। चिकित्सालय से बाहर निकलते ही नादान एक पूर्णतः परिवर्तित मनुष्य बन चुके थे। अब भी वे शांत रहते थे... लेकिन यह शांति परम संतोष, गुरु-भक्ति और जनहित सेवा की गहराई से उपजी हुई आत्मिक शांति थी। उन्होंने अपना शेष जीवन दीन-दुखियों की सेवा और निस्वार्थ भाव से परोपकार के पावन मार्ग पर समर्पित कर दिया।

इस संसार में कुछ भी स्थायी नहीं है सब यहीं छूट जाना है। गुरु कृपा और ईश्वर की दी हुई साँसों से बढ़कर कोई दौलत नहीं है। चिकित्सालय की दीवारें हमें चेतावनी देती हैं कि झूठे अहंकार, धन के मोह और व्यर्थ के मन मुटाव में अपनी अनमोल साँसों को मत गँवाइए। जब तक जीवन है, दूसरों के काम आए परोपकार ही इस संसार का सबसे बड़ा धर्म है और वही आपके चले जाने के बाद भी अमर रहेगा।

आपके दिन की शुरुआत, पारुल भटनागर के साथ

विशेषज्ञ एस्ट्रो न्यूमेरो वास्तु कंसल्टेंट

परिवहन विशेष News

अंक ज्योतिष भविष्यवाणी • 20 सितम्बर 2026

दिन का अंक: 3 | रचनात्मकता, संवाद, आत्मविश्वास, आनंद और सकारात्मक अभिव्यक्ति का दिन।

मूलांक 1 | आशावाद के साथ नेतृत्व व्यक्त करें

आज आपका आत्मविश्वास सकारात्मक संवाद के साथ दूसरों को प्रेरित कर सकता है। कोई नया विचार या कार्यक्षेत्र की बातचीत समर्थन पा सकती है, विशेषकर जब आप अपनी बड़ी सोच स्पष्ट रूप से समझाएं। अधीरता से बचें और दूसरों को भी योगदान देने का पर्याप्त अवसर दें।

मूलांक 2 | अपनी भावनाएं स्पष्ट रूप से व्यक्त करें

आज भावनाओं को भीतर रखने के बजाय संवाद करना अधिक लाभकारी रहेगा। सहज और अपनापन भरी बातचीत किसी रिश्ते या साझेदारी को बेहतर बना सकती है और छोटी गलतफहमी दूर कर सकती है। हर प्रतिक्रिया का जरूरत से ज्यादा विश्लेषण न करें; सच्चाई बेहतर जुड़ाव बनाएगी।

मूलांक 3 | आज आपका स्वाभाविक अंक विशेष रूप से समर्थित है

आज का अंक आपकी रचनात्मकता, संवाद क्षमता और आशावादी स्वभाव के साथ सुंदर सामंजस्य बनाता है। लेखन, शिक्षण, प्रस्तुति, संपर्क या किसी विचार को साझा करने से सकारात्मक पहचान मिल सकती है। ऊर्जा का सही उपयोग करें और बहुत सारी योजनाओं में ध्यान न बिखेरें।

मूलांक 4 | दिनचर्या में नया विचार जोड़ें

आपकी व्यवस्थित कार्यशैली आज थोड़ी रचनात्मकता से और बेहतर हो सकती है। कोई दोहराव वाला काम या व्यावहारिक समस्या अलग तरीका अपनाने से आसान हो सकती है। जो व्यवस्था सही काम कर रही है उसे बनाए रखें, लेकिन सुधार के लिए लचीलापन भी रखें।

मूलांक 5 | बातचीत नए अवसरों के द्वार खोल सकती है

फोन, बैठक, सामाजिक संपर्क या यात्रा उपयोगी संभावनाएं सामने ला सकती है। आपकी तेज सोच विचारों और लोगों को जोड़ने में मदद करेगी। सक्रिय दिन का आनंद लें, लेकिन वादा करने से पहले यह जरूर देखें कि आप उसे व्यावहारिक रूप से पूरा कर पाएंगे या नहीं।

मूलांक 6 | आनंद बनाएं, लेकिन जरूरत से ज्यादा जिम्मेदारी न लें

परिवार, रिश्ते और रचनात्मक रुचियां आज संतोष दे सकती हैं। आपका अपनापन दूसरों को सहयोग का अनुभव कराएगा, लेकिन हर अनुरोध स्वीकार करना जरूरी नहीं है। सुखद संबंधों के लिए समय निकालें और अपनी प्राथमिकताओं की भी रक्षा करें।

मूलांक 7 | अपनी अंतर्दृष्टि को अभिव्यक्ति दें

आपने किसी विषय पर काफी शांत चिंतन किया हो सकता है और आज अपनी समझ को व्यक्त करने का अवसर मिलेगा। अपने विचार सोच-समझकर और स्पष्ट रूप से साझा करें। अध्ययन, लेखन या सार्थक चर्चा किसी आंतरिक समझ को उपयोगी दिशा दे सकती है।

मूलांक 8 | अपनी महत्वाकांक्षाएं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करें

करियर और धन से जुड़े मामलों में आत्मविश्वासी संवाद लाभ दे सकता है। यदि सहयोग, स्वीकृति या समर्थन चाहिए तो अपनी योजना तथ्यों और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ रखें। अत्यधिक दबावपूर्ण न लगे; शांत आत्मविश्वास अधिक प्रभावशाली रहेगा।

मूलांक 9 | अपने जोश से प्रगति को प्रेरित करें

आज आपकी ऊर्जा अभिव्यक्तिपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण है। यह दूसरों को प्रेरित करने, महत्वपूर्ण कार्य पूरा करने या किसी सार्थक विषय पर बोलने में मदद करेगी। भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को संतुलित रखें और अपनी तीव्रता को टकराव के बजाय रचनात्मक परिणामों की ओर लगाएं।

कॉल / व्हाट्सएप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vediccodes.in

फेसबुक • इंस्टाग्राम • यूट्यूब: @vediccodes
Vediccodes - Your vibrations... our solutions

‘मेरे सपनों का भारत’ माॅड्यूल के तहत विद्यार्थियों ने भाषणों में दिखाई विकसित भारत की कल्पना

सेवा संकल्प अभियान में राजकीय व निजी विद्यालयों में आयोजित हुई भाषण प्रतियोगिताएं



राष्ट्र निर्माण और देशभक्ति के विषयों पर विद्यार्थियों ने रखे विचार

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 19 सितंबर । सेवा संकल्प अभियान के तहत जिलेभर में विद्यार्थियों को राष्ट्र निर्माण, देशभक्ति और विकसित भारत की संकल्पना से जोड़ने के उद्देश्य से विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। इसी कड़ी में ‘मेरे सपनों का भारत’ माॅड्यूल के अंतर्गत झज्जर जिले के राजकीय एवं

निजी विद्यालयों में ‘विकसित भारत-2047’ सहित राष्ट्रवाद, देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता, नागरिक कर्तव्य एवं राष्ट्र निर्माण जैसे विषयों पर भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

डीसी वर्षा खंगवाल के मार्गदर्शन एवं जिला शिक्षा अधिकारी रतींद्र सिंह की देखरेख में आयोजित इन प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विद्यार्थियों ने अपने भाषणों के माध्यम से वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की अपनी कल्पना साझा की तथा देश के

विकास में युवा पीढ़ी की भूमिका पर विचार रखे।

विद्यार्थियों ने भाषणों के माध्यम से व्यक्त किए अपने विचार

झज्जर जिला के विद्यालयों में आयोजित भाषण प्रतियोगिता के दौरान विद्यार्थियों ने ‘विकसित भारत-2047’, आत्मनिर्भर भारत, राष्ट्र प्रथम, राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता, देशभक्ति, सामाजिक जिम्मेदारी, पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा, तकनीकी विकास और युवा शक्ति जैसे विभिन्न विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। विद्यार्थियों ने

कहा कि विकसित भारत का सपना केवल सरकार का लक्ष्य नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की सहभागिता और जिम्मेदारी से पूरा होने वाला संकल्प है।

कई विद्यार्थियों ने अपने भाषणों में भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, वैज्ञानिक उपलब्धियों और युवा शक्ति का उल्लेख करते हुए कहा कि देश को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में विद्यार्थियों और युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने अपने आसपास स्वच्छता बनाए रखने, पर्यावरण संरक्षण, अनुशासन का पालन करने, शिक्षा

को प्राथमिकता देने तथा समाज के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनने का संदेश भी दिया।

राजकीय व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों ने बड़-चढ़कर लिया भाग

जिले के विभिन्न राजकीय एवं निजी विद्यालयों में आयोजित प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह के साथ सहभागिता की। मंच पर विद्यार्थियों ने आत्मविश्वास के साथ अपने विचार रखे और ‘मेरा भारत कैसा हो’ की कल्पना को शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त किया। प्रतियोगिता के

माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के साथ-साथ देश और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को समझने का अवसर मिला।

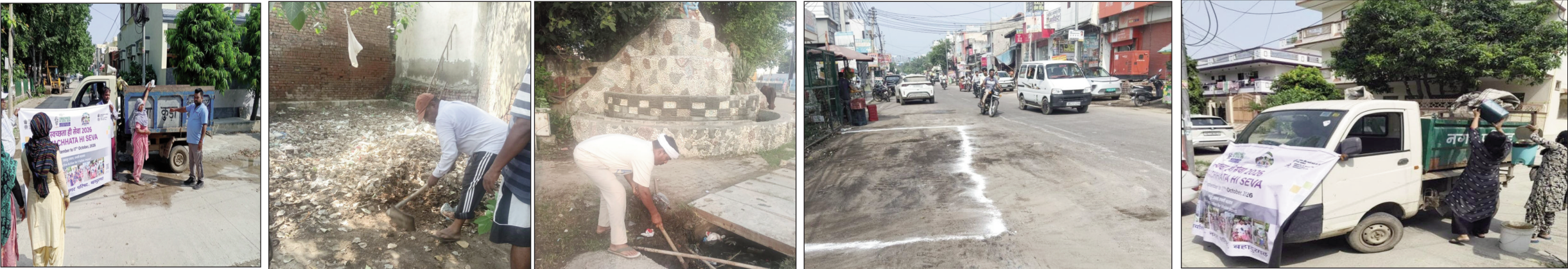
युवा पीढ़ी में राष्ट्र निर्माण की भावना को मजबूत करने पर जोर

डीसी वर्षा खंगवाल के मार्गदर्शन में सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत जिले में विद्यार्थियों और युवाओं को विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों से जोड़कर उनमें सेवा, सहभागिता, जिम्मेदारी और राष्ट्र निर्माण की भावना को मजबूत किया जा रहा

है। ‘मेरे सपनों का भारत’ माॅड्यूल के तहत आयोजित भाषण प्रतियोगिता भी इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल रही।

जिला शिक्षा अधिकारी रतींद्र सिंह ने बताया कि विद्यालयों में ऐसी गतिविधियों का उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रखते हुए उन्हें देश के वर्तमान और भविष्य से जोड़ना है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों के विचारों में विकसित भारत-2047 के प्रति उत्साह, देशभक्ति और सकारात्मक सोच स्पष्ट रूप से दिखाई दी।

सेवा संकल्प अभियान में ‘सेवा मेरा योगदान’ के तहत चला स्वच्छता अभियान



झज्जर, बहादुरगढ़ व बेरी शहरी क्षेत्रों में क्लीनलिनेस टारगेट यूनिट्स व गाबैज वल्नरेबल पॉइंट्स की हुई सफाई डीएमसी जगनिवास की देखरेख में चला विशेष स्वच्छता अभियान, नागरिकों को स्वच्छता के प्रति किया जागरूक

झज्जर, 19 सितंबर । जिला झज्जर में 17 अक्टूबर तक चलाए जा रहे सेवा संकल्प अभियान के तहत ‘सेवा मेरा योगदान’ थीम के अंतर्गत स्वच्छता गतिविधियों का आयोजन लगातार किया जा रहा है। इसी कड़ी में शनिवार को डीसी वर्षा खंगवाल के मार्गदर्शन तथा एडीसी एवं डीएमसी जगनिवास की देखरेख में झज्जर, बहादुरगढ़ व बेरी के शहरी क्षेत्रों में विशेष स्वच्छता अभियान

चलाया गया।

अभियान के दौरान शहरी क्षेत्रों में चिन्हित क्लीनलिनेस टारगेट यूनिट्स तथा गाबैज वल्नरेबल पॉइंट्स को विशेष रूप से सफाई की गई। सफाई कर्मचारियों व संबंधित टीमों ने इन स्थानों से कचरा हटाकर आसपास के क्षेत्र को स्वच्छ एवं साफ-सुथरा बनाया।

डीएमसी जगनिवास ने अभियान की निगरानी

करते हुए संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को निर्देश दिए कि चिन्हित स्थानों की नियमित सफाई सुनिश्चित की जाए और कचरा दोबारा जमा न होने पाए। उन्होंने कहा कि स्वच्छता केवल एक दिन का अभियान नहीं, बल्कि निरंतर चलने वाली सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने आमजन से भी अपील की कि वे अपने आसपास स्वच्छता बनाए रखने में प्रशासन का सहयोग करें, कूड़ा निर्धारित

स्थान पर ही डालें और अन्य नागरिकों को भी स्वच्छता के प्रति जागरूक करें।

जिला प्रशासन की ओर से सेवा संकल्प अभियान के तहत सेवा, सहयोग और सहभागिता की भावना को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न जनकल्याणकारी एवं सामाजिक गतिविधियां लगातार आयोजित की जा रही हैं।

झज्जर नगर परिषद क्षेत्र में ईओ देवेन्द्र कुमार व

बहादुरगढ़ नगर परिषद क्षेत्र में ईओ संजय रोहिल्ला की देखरेख में सेवा मेरा योगदान थीम पर आमजन को जागरूक किया गया। उन्होंने बताया कि सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत जिला में जन जागरूकता गतिविधियों का प्रभावी रूप से चलाया जा रहा यही और लोगों को स्वच्छता बनाये रखने का संदेश देने में शहरी निकाय अपनी प्रभावी जिम्मेदारी निभा रहा है।

सेवा संकल्प अभियान-सेवा की कहानी

खारे पानी से प्रभावित जमीन में उगाई खुशहाली, झींगा पालन ने बदली श्यामपाल की जिंदगी



जहां पारंपरिक खेती थी मुश्किल, वहीं 2 हेक्टेयर जमीन पर शुरू किया झींगा पालन; अब सालाना लाखों रुपये की शुद्ध आय

मत्स्य विभाग से प्रशिक्षण और सरकारी योजना के मार्गदर्शन से किसान ने बेकार पड़ी जमीन को बनाया कमाई का जरिया

सामने लाने का माध्यम

सेवा संकल्प अभियान के तहत सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित लोगों की सफलता की कहानियां सामने लाई जा रही हैं। इसी कड़ी में श्यामपाल चौहान की कहानी यह बताती है कि यदि किसी चुनौती को अवसर में बदलने का प्रयास किया जाए और सरकारी विभागों से उचित मार्गदर्शन प्राप्त हो तो अनुपयोगी समझी जाने वाली जमीन भी आमदनी का मजबूत साधन बन सकती है।

खारे पानी से प्रभावित जमीन ने दिखाई नई राह

श्यामपाल चौहान ने बताया कि खारे पानी से प्रभावित होने के कारण उनकी जमीन का उपयोग पारंपरिक खेती के लिए आसानी से नहीं हो पा रहा था। ऐसे में उन्होंने जमीन को बेकार छोड़ने के बजाय इसका वैकल्पिक उपयोग करने के बारे में सोचा। इसी दौरान उन्हें खारे पानी वाले क्षेत्र में झींगा पालन की संभावना के बारे में जानकारी मिली। उन्होंने झज्जर के मत्स्य विभाग से संपर्क किया। विभाग की ओर से उन्हें झींगा पालन के संबंध में प्रशिक्षण दिया गया तथा तालाब तैयार करने, झींगा के बीज डालने,

पानी की गुणवत्ता बनाए रखने और पालन के दौरान जरूरी सावधानियों के बारे में जानकारी दी गई।

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के अनुरूप तैयार किया तालाब

प्रशिक्षण और विभागीय मार्गदर्शन प्राप्त करने के बाद श्यामपाल चौहान ने प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के दिशा-निर्देशों के अनुरूप अपनी जमीन पर झींगा पालन के लिए तालाब तैयार करवाया। उन्होंने शुरुआत में करीब 40 लाख रुपये का निवेश किया और भाटड़ा क्षेत्र में लगभग 2 हेक्टेयर भूमि पर झींगा पालन शुरू किया। नई गतिविधि होने के कारण शुरुआत में उनके सामने कई चुनौतियां थीं, लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं छोड़ी। मत्स्य विभाग की सलाह के अनुसार तालाब और पानी का प्रबंधन करते हुए उन्होंने झींगा पालन को आगे बढ़ाया।

18 टन से शुरू हुआ उत्पादन, अब 20 टन तक पहुंचा

मेहनत और सही प्रबंधन का परिणाम उत्पादन में दिखाई दिया। वर्ष 2024-25 में श्यामपाल चौहान ने लगभग 18 टन झींगा का

उत्पादन किया। वर्ष 2025-26 में उत्पादन बढ़कर करीब 20 टन हो गया। झींगा की बिक्री उन्हें लगभग 380 रुपये से 480 रुपये प्रति किलोग्राम तक के भाव पर प्राप्त होती है। इस प्रकार झींगा पालन उनके लिए आय का एक मजबूत साधन बन गया है।

सालाना 15.90 से 17 लाख रुपये तक की आय

श्यामपाल चौहान ने बताया कि झींगा पालन से उन्हें सालाना करीब 15.90 लाख रुपये से 17 लाख रुपये तक की आय प्राप्त हो रही है। इससे उनके परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार आया है और जीवन स्तर भी बेहतर हुआ है। उन्होंने बताया कि जिस जमीन को लेकर पहले चिंता रहती थी, वही आज उनके लिए आर्थिक मजबूती का आधार बन चुकी है।

सरकारी मार्गदर्शन ने दिया आगे बढ़ने का हौसला

श्यामपाल चौहान ने कहा कि झींगा पालन शुरू करने में मत्स्य विभाग से मिले प्रशिक्षण और मार्गदर्शन ने उनका हौसला बढ़ाया। उन्होंने बताया कि सही जानकारी मिलने के बाद उन्होंने जोखिम उठाकर इस नए व्यवसाय की शुरुआत की और आज इस्का

लाभ उन्हें मिल रहा है। उन्होंने कहा कि खारे पानी से प्रभावित क्षेत्र के अन्य किसान भी विभाग से जानकारी लेकर झींगा पालन जैसी गतिविधियों को अपना सकते हैं। इससे ऐसी जमीन का बेहतर उपयोग होने के साथ-साथ किसानों की आमदनी बढ़ाने के नए अवसर भी पैदा हो सकते हैं।

मेहनत, मार्गदर्शन और नई सोच का परिणाम है सफलता

श्यामपाल चौहान की सफलता की कहानी यह संदेश देती है कि संसाधनों की कमी या जमीन की किसी समस्या को विकास की राह में बाधा मानकर रुकने के बजाय नई संभावनाएं तलाशनी चाहिए। सरकारी योजनाओं की जानकारी, विभागीय प्रशिक्षण, तकनीकी मार्गदर्शन और किसान की मेहनत मिलकर बदलाव की ऐसी कहानी लिख सकते हैं, जो दूसरे किसानों के लिए भी प्रेरणा बनती है।

सेवा संकल्प अभियान के माध्यम से सामने आई श्यामपाल चौहान की यह कहानी इस बात की मिसाल है कि सही दिशा और मेहनत के साथ चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों को भी अवसर में बदल जा सकता है।

प्रत्येक पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में दर्ज हो : डीसी



एसआईआर-2026 प्रक्रिया के तहत 30 सितंबर तक दर्ज कराएं दावे-आपत्तियां, पात्र युवा तुरंत भरे फॉर्म-6

डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खंगवाल ने पात्र मतदाताओं से किया आह्वान

झज्जर, 19 सितंबर। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिला झज्जर के चारों विधानसभा क्षेत्रों में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर)-2026 प्रक्रिया के तहत मतदाता सूची को शुद्ध एवं अद्यतन बनाने का कार्य जारी है। यह जानकारी डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खंगवाल ने दी। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि अभियान के दौरान प्रत्येक पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में दर्ज हो तथा अपात्र नामों को हटाने और आवश्यक संशोधनों की प्रक्रिया निर्धारित समय सीमा में पूरी की जाए।

डीसी ने पात्र नागरिकों से अपील की कि वे अपना तथा परिवार के सभी पात्र सदस्यों का नाम और विवरण प्रारंभिक मतदाता सूची में समय रहते जांच लें। उन्होंने कहा कि जिन पात्र नागरिकों का नाम प्रारंभिक मतदाता सूची में दर्ज नहीं है, वे निर्धारित दस्तावेजों एवं घोषणा-पत्र के साथ फॉर्म-6 के माध्यम से नाम शामिल करवाने के लिए दावा प्रस्तुत कर सकते हैं। पात्र युवाओं से विशेष आग्रह किया गया कि वे मतदाता बनने के लिए फॉर्म-6 भरकर आवेदन करें और 30 सितंबर की अंतिम तिथि का इंतजार न करें। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि अभियान के दौरान नागरिकों को आवेदन प्रक्रिया की जानकारी उपलब्ध करवाने के साथ-साथ दावे-आपत्तियों के समयबद्ध निपटान पर विशेष ध्यान दिया जाए।

वोटर हर हाल में 30 सितंबर तक दर्ज कराएं दावे-आपत्तियां

डीसी ने बताया कि एसआईआर-

करने चाहिए, ताकि दावे-आपत्तियों का निपटान नियमानुसार किया जा सके।

बीएलओ, ईआरओ और एईआरओ से प्राप्त करें सहायता

जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खंगवाल ने कहा कि नागरिक दावे एवं आपत्तियां दर्ज कराने अथवा आवेदन प्रक्रिया की जानकारी के लिए अपने क्षेत्र के बूथ लेवल अधिकारी (बीएलओ), निर्वाचक पंजीयन अधिकारी (ईआरओ) अथवा सहायक निर्वाचक पंजीयन अधिकारी (एईआरओ) से संपर्क कर सकते हैं। ऑनलाइन आवेदन की सुविधा भी उपलब्ध है। मतदाता सूची से संबंधित सहायता के लिए मतदाता हेल्पलाइन नंबर 1950 पर संपर्क किया जा सकता है।

डीसी ने कहा कि मतदाता सूची को शुद्ध, विश्वसनीय एवं अद्यतन बनाने में नागरिकों की सक्रिय सहभागिता महत्वपूर्ण है। स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं पारदर्शी निर्वाचन प्रक्रिया के लिए प्रत्येक पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में दर्ज होना आवश्यक है। उन्होंने सभी पात्र नागरिकों से अपील की कि वे एसआईआर-2026 अभियान के तहत निर्धारित समय सीमा में आवश्यक कार्रवाई पूरी करें।

बीरेन पति बने भाजपा राउरकेला विधानसभा आईटी सेल के सह-संयोजक



नियुक्ति, समर्थकों ने सांसद दिलीप राय सहित पार्टी नेतृत्व का जताया आभार
डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक राउरकेला

युवा भाजपा नेता बीरेन पति को राउरकेला विधानसभा क्षेत्र के भाजपा आईटी सेल का सह-संयोजक (को-कन्वेनर) नियुक्त किया गया है। यह

नियुक्ति ओडिशा भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष मनमोहन सामल की अनुशंसा पर की गई है। बीरेन पति को नई जिम्मेदारी मिलने के बाद पार्टी कार्यकर्ताओं एवं समर्थकों में उत्साह देखा गया। समर्थकों ने वरिष्ठ नेता एवं सांसद दिलीप राय के प्रति उनके मार्गदर्शन, आशीर्वाद और सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया। साथ ही प्रदेश अध्यक्ष मनमोहन सामल के प्रति भी धन्यवाद जताया। समर्थकों ने भाजपा जिला अध्यक्ष एवं उनकी पूरी टीम का भी आभार व्यक्त करते

हुए कहा कि बीरेन पति की नियुक्ति से राउरकेला विधानसभा क्षेत्र में पार्टी की डिजिटल गतिविधियों, आईटी नेटवर्क और संगठनात्मक पहुंच को मजबूती मिलने की उम्मीद है।

नई जिम्मेदारी पर समर्थकों ने बीरेन पति को शुभकामनाएं दीं और उम्मीद जताई कि वे आईटी सेल को जमीनी स्तर तक सक्रिय बनाएं, डिजिटल माध्यमों के प्रभावी उपयोग तथा संगठन की गतिविधियों को व्यापक स्तर पर पहुंचाने में सक्रिय भूमिका निभाएं।

राउरकेला सर्किट हाउस विवाद पर ओडिशा सरकार सख्त, नाजिर समेत संबंधित अधिकारी हटाए गए

राजस्व मंत्री सुरेश पुजारी ने दिए उच्चस्तरीय विभागीय जांच के निर्देश, नियमों के उल्लंघन पर दोषियों के खिलाफ होगी अनुशासनात्मक कार्रवाई भविष्य में अनियमितताओं पर रोक के लिए पूरे ओडिशा में लागू होगी नई SOP, सर्किट हाउस की बुकिंग होगी पूरी तरह ऑनलाइन



डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक राउरकेला,



राउरकेला सर्किट हाउस से जुड़े विवाद को ओडिशा सरकार ने गंभीरता से लेते हुए कड़ा रुख अपनाया है। राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री सुरेश पुजारी ने मामले की उच्चस्तरीय विभागीय जांच के निर्देश दिए हैं। मंत्री ने घटना को गंभीर बताते हुए कहा कि

इससे लोगों में गहरी चिंता उत्पन्न हुई है। सरकार ने जिम्मेदारी तय करने और भविष्य में ऐसी अनियमितताओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए प्रशासनिक कदम शुरू कर दिए हैं। नाजिर व संबंधित अधिकारी हटाए गए

राजस्व मंत्री के निर्देश के बाद सर्किट हाउस के प्रभारी नाजिर (Nazir) सहित मामले से जुड़े अन्य संबंधित अधिकारियों को तत्काल प्रभाव से उनकी जिम्मेदारियों से हटा दिया गया है। जांच में नियमों के उल्लंघन या प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सिलसिलता प्रमाणित होने पर संबंधित अधिकारियों के विरुद्ध लागू नियमों के तहत अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी।

राउरकेला सर्किट हाउस विवाद में सरकार की अतिथि गृह के आवंटन और प्रबंधन की प्रक्रिया को लेकर पहले से सवाल उठ रहे हैं। सरकारी सर्किट हाउस आधिकारिक यात्राओं के दौरान आवास एवं छोटी बैठकों के लिए संचालित किए जाते हैं।

पूरे राज्य में बदलेगी बुकिंग व्यवस्था सरकार ने भविष्य में ऐसी घटनाओं पर रोक लगाने के लिए पूरे ओडिशा में नई मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) लागू करने का निर्णय लिया है। इसके तहत सभी सर्किट हाउस की बुकिंग व्यवस्था को ओडिशा भवन की तर्ज पर पूरी तरह ऑनलाइन किया जाएगा। सरकार का कहना है कि इससे आवंटन प्रक्रिया में पारदर्शिता बढ़ेगी और प्रबंधन में संभावित अनियमितताओं पर अंकुश लगाने में मदद मिलेगी।

टैपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत की आम बैठक में उपस्थित जनता के सरकार से पूछे सवाल, आपके समक्ष

पिंकी कुंडू राष्ट्रीय महासचिव टोलवा ट्रस्ट, सामाजिक परामर्शदाता, नेत्री भाजपा

सवाल :

1. गाड़ियों की स्पीड लिमिट 100 है तो मीटर 180 या उससे ज्यादा का क्यों?
2. रोड टैक्स के बाद टोल टैक्स किस बात का ?
3. GST लागू होने पर

- पेट्रोल-डीजल बाहर क्यों ?
4. शराब-सिगरेट हानिकारक हैं तो पूर्ण रूप से बैन क्यों नहीं?
5. सीट बेल्ट नहीं लगाने पर चालान कटता है, तो गड़ों पर मुआवजा क्यों नहीं मिलता ?
6. आम आदमी पर कुर्की के आदेश और अमीरों के कर्ज माफ क्यों ?

7. सरकारी स्कूल-अस्पताल अच्छे हैं तो अफसर, नेता प्राइवेट अपने बच्चों को पढ़वाते हैं प्राइवेट स्कूल में या विदेश में ?
8. प्लास्टिक पर बैन के बाद प्लास्टिक फैक्ट्रियों को चालू रहने का लाइसेंस क्यों ?
9. प्रदूषण का टीकरा गाड़ियों पर, फैक्ट्रियों के काले धुएं पर

- चुपी क्यों ?
 10. पुलिस जनता के लिए है तो जनता से ही लुट में और VIP झुट्टी में व्यस्त क्यों ?
 11. NOTA सबसे आगे हो, तब भी दूसरा प्रत्याशी विजेता क्यों ?
- सहमत हो तो आप भी अवश्य अपने स्तर पर जवाब देना और पूछना।

जनहित जनकल्याण - बेटी बचाओ - टोलवा ट्रस्ट

“बेटी होने की सजा क्यों?” – हाईकोर्ट की टिप्पणी 'यह दुर्भाग्यपूर्ण कि आज भी लोग बेटी ही चाहते हैं' पर कवि ने उठाया आईना आजादी के 78 साल बाद भी कोख में कली क्यों मिटाई जाए? बेटी सिर्फ बेटी नहीं, कल की माँ और दो घरों की रोशनी है

कवि: संजय एम तराणेकर प्रस्तुतकर्ता पिंकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता राष्ट्रीय महासचिव टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत नेत्री भाजपा दिल्ली प्रदेश

एक कविता नहीं, समाज पर आरोप पत्र

जब माननीय हाईकोर्ट को यह कहना पड़े कि रथ दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज भी लोग बेटी ही चाहते हैं तो समझ लीजिए कि कानून किताबों में है, सोच अभी भी कोख में ही अटकती है।

इसी पीड़ा को कवि संजय एम तराणेकर ने अपनी कविता रबेटी होने की सजा क्यों? रं में शब्द दिए हैं। यह कविता नहीं, आज के समाज से एक सवाल है।

मूल कविता > आजादी को गुजरे दशकों का लंबा दौर हुआ, > बेटी के जन्म पर क्यों मन में कोई शोर हुआ ? > बेटी को चाहत में बेटी यूं बोझ समझ ली जाए,

> ममतामई 'कोख से कली' क्यों ? मिटाई जाए ? > जिस पर बेटी जन्मे, वहाँ खुशियों के दीप जलें,

> वह आँगन हैंसी से महके, सपनों को पंख मिलें। > बेटी या बेटी, दोनों जीवन की अनमोल सौगात,

> फिर क्यों लिंग के तराजू पे



तौली जाती है बात ? > एक बेटी सिर्फ बेटी नहीं, वह कल की माँ भी है, > किसी घर की रोशनी, दूसरे घरों की शान भी है।

> दुर्भाग्य ये नहीं कि लोग आज भी बेटी चाहते हैं, > ये दुर्भाग्य है कुछ लोग बेटी को जीने नहीं देते हैं।

> आईए सोच बदलें उन बेटीयों को अधिकार मिले, > जिस धरती पर जन्मी, उस धरती पे संसार मिले।

> हर एक बेटी को स्नेह व सम्मान का आधार मिले,

> नवयुग में बेटी को पाकर परिवार में चेहरे खिले।

मुख्य बिंदुवार - कविता का विस्तृत विश्लेषण बिंदु 1: पहला अंतरा - आजादी का अधूरा अर्थ कवि प्रकृत है - दशकों का दौर गुजर गया, पर बेटी के जन्म पर शोर क्यों ?

तथ्य: 2021 की जनगणना के अनुसार भारत का लिंगानुपात 1020 महिला प्रति 1000 पुरुष हुआ है, पर जन्म के समय लिंगानुपात (Sex Ratio at Birth) अभी भी 907 है। यानी आजादी मिली, पर कोख आजाद नहीं हुई।

PCPNDT Act 1994 के 30 साल बाद भी भ्रूण लिंग जांच

चोरी-छिपे हो रही है। यही रकोख से कली मिटना है।

बिंदु 2: दूसरा अंतरा - खुशी का अर्थशास्त्र जिस घर बेटी जन्मे, वहां दीप जलें

तथ्य: सरकार की बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, सुकन्या समृद्धि योजना, लाडली लक्ष्मी योजना इसी सोच को बदलने के लिए हैं।

नोबेल विजेता अमर्त्य सेन कहते हैं - जिस देश ने बेटीयों को पढ़ाया, उसकी GDP 1.5% तेज बढ़ी। बेटी बोझ नहीं, आर्थिक सौगात है। कल्पना चावला से लेकर पीवी सिंधु तक, बेटीयों ने ही आँगन महकाया है।

बिंदु 3: तीसरा अंतरा - सबसे गहरी पंक्ति और हाईकोर्ट का संदर्भ

“दुर्भाग्य ये नहीं कि लोग बेटी चाहते हैं, ये दुर्भाग्य है कुछ लोग बेटी को जीने नहीं देते हैं” यह कविता का मूल दर्शन और हाईकोर्ट की टिप्पणी का सार है। कोर्ट ने कई भ्रूण हत्या और दहेज हत्या मामलों में कहा है - बेटी चाहना व्यक्तिगत पसंद हो सकती है, पर बेटी को जीने न देना अपराध है।

- IPC की धारा 312-316 - गर्भपात और भ्रूण हत्या पर सजा

- दहेज प्रतिषेध अधिनियम - बेटी को बोझ समझने की

मानसिकता पर प्रहार कवि कहता है - बेटी एक शरीर नहीं, दो परिवारों की कड़ी है। वह जिस घर जन्मती है उसकी रोशनी, और जिस घर जाती है उसकी शान है।

बिंदु 4: चौथा अंतरा - समाधान - सोच बदलो कवि नारा नहीं, अधिकार मांगता है:

1. अधिकार मिले: पैतृक संपत्ति में बराबर अधिकार (Hindu Succession Amendment 2005)

2. संसार मिले: जिस धरती पर जन्मी, उसी पर खुलकर जीने, पढ़ने, काम करने का संसार

3. आधार मिले: स्नेह और सम्मान - जो दया नहीं, अधिकार है।

संपादकीय निष्कर्ष - जनहित में आह्वान यह कविता हर उस पिता के लिए है जिसने बेटी के जन्म पर मुंह मोड़ा, और हर उस माँ के लिए है जिसने बेटी को गर्भ में ही खो दिया।

हाईकोर्ट ने कानून की भाषा में कहा, कवि ने दिल की भाषा में। बात एक ही है - बेटी या बेटी, दोनों अनमोल सौगात हैं। लिंग के तराजू पर तौलना बंद कीजिए।

जिस दिन बेटी के जन्म पर शोर नहीं, शहनाई बजेगी, उसी दिन आजादी पूरी होगी।

शियारमाल गांव के 29 लोगों को वन भूमि पट्टा प्रदान पात्र हितग्राहियों को मिला भूमि पर अधिकार, आजीविका के लिए मिलेगा स्थायित्व



डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक सुंदरगढ़,

हेमगिरि तहसील अंतर्गत शियारमाल गांव के 29 पात्र हितग्राहियों को शुक्रवार को वन भूमि पट्टा प्रदान किया गया। अतिरिक्त जिलापाल (राजस्व) के कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित पट्टा वितरण कार्यक्रम में पात्र लाभार्थियों को उनके वन भूमि अधिकार से संबंधित पट्टे सौंपे गए।

कार्यक्रम में अतिरिक्त जिलापाल (राजस्व) अभिमन्यु माझी, सदर उपजिलापाल तेजस्वीनी बेहरा तथा सुंदरगढ़ समन्वित आदिवासी विकास संस्था के परियोजना प्रशासक धीरेंद्र कुमार सेठी उपस्थित रहे। अधिकारियों ने पात्र हितग्राहियों को वन भूमि पट्टे वितरित किए। पट्टा प्राप्त होने के बाद हितग्राहियों को संबंधित भूमि पर वैधानिक

अधिकार प्राप्त होगा। इससे वे अपनी भूमि का उपयोग करते हुए कृषि एवं अन्य आजीविका गतिविधियों के माध्यम से जीवन-यापन अधिक सुगमता और स्थायित्व के साथ कर सकेंगे। वन भूमि पट्टा वितरण को स्थानीय ग्रामीणों के भूमि अधिकारों को सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

सुशांत सिंह राजपूत मृत्यु प्रकरण में फिर न्यायिक जांच की मांग तेज - सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता संजीव कुमार सिंह ने राष्ट्रपति को भेजी याचिका, SC या बॉम्बे हाईकोर्ट के वर्तमान जज की अध्यक्षता में आयोग बनाने की मांग

राष्ट्रपति सचिवालय ने 10 सितंबर को महाराष्ट्र मुख्य सचिव को कार्रवाई के निर्देश दिए; याचिका में दिशा सालियान मामले को भी जोड़ने और पोस्टमार्टम वीडियोग्राफी न होने पर सवाल उठाए

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

5 साल बाद फिर क्यों उठी जांच की मांग ? फिल्म अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की जून 2020 में मुंबई के बांद्रा स्थित आवास पर हुई मृत्यु के 5 साल बाद भी मामला न्यायिक गलियारों में जंदा है। सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया के अधिवक्ता संजीव कुमार सिंह ने भारत की महामहिम राष्ट्रपति महोदया को याचिका भेजकर न्यायिक आयोग गठित करने का अनुरोध किया है। याचिका में मांग की गई है कि आयोग की अध्यक्षता सर्वोच्च न्यायालय अथवा बॉम्बे हाईकोर्ट के किसी वर्तमान माननीय न्यायाधीश से कराई जाए।

मुख्य बिंदुवार - याचिका में क्या है ? बिंदु 1: याचिका का आधार

और ताजा अपडेट

- याचिकाकर्ता: एडवोकेट संजीव कुमार सिंह, सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया

- किसे भेजी: महामहिम राष्ट्रपति महोदया

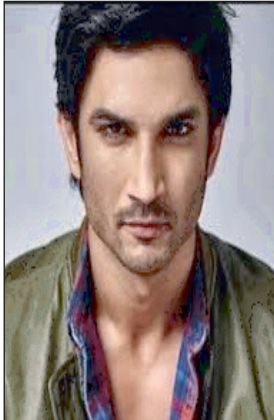
- ताजा प्रगति: अधिवक्ता के अनुसार 10 सितंबर 2026 को राष्ट्रपति सचिवालय से महाराष्ट्र सरकार के मुख्य सचिव को इस याचिका पर कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए हैं।

- अगला कदम: याचिकाकर्ता अब मुंबई जाकर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेंद्र फडणवीस, मुख्यमंत्री सचिव और महामहिम राज्यपाल से मुलाकात करेंगे।

बिंदु 2: याचिका की 4 प्रमुख मांगें

1. स्वतंत्र न्यायिक आयोग: सुशांत सिंह राजपूत और उनकी पूर्व प्रबंधक दिशा सालियान - दोनों की मृत्यु की समग्र, स्वतंत्र, निष्पक्ष और साक्ष्य आधारित जांच हो।

2. दोनों मामलों को जोड़कर जांच: याचिका में कहा गया है कि दिशा सालियान की मृत्यु से जुड़े स्रोतों और साक्ष्यों से सुशांत केस में भी महत्वपूर्ण तथ्य सामने आ सकते हैं, इसलिए दोनों के बीच



संभावित आपराधिक संबंध की भी न्यायिक समीक्षा जरूरी है।

3. पूर्व जांच पर सवाल: वर्ष 2020-2021 के दौरान मुंबई पुलिस और सीबीआई की जांच प्रक्रिया अपेक्षित रूप से निष्पक्ष नहीं रही।

4. दोषियों पर कार्रवाई: अधिवक्ता ने कहा - र जांच स्वतंत्र, निष्पक्ष और साक्ष्य आधारित होनी चाहिए, ताकि मृत्यु से जुड़े सभी महत्वपूर्ण तथ्यों की निष्पक्ष पड़ताल हो सके। जांच के निष्कर्षों के आधार पर दोषी पाए जाने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध कानून के अनुरूप कार्रवाई की जाए।"



बिंदु 3: किन बिंदुओं पर उठाए गए सवाल ? याचिका में विशेष रूप से तीन तकनीकी बिंदुओं पर सवाल उठाए गए हैं:

- पोस्टमार्टम प्रक्रिया: पोस्टमार्टम रिपोर्ट तैयार करने की प्रक्रिया और पोस्टमार्टम के दौरान वीडियोग्राफी नहीं किए जाने को लेकर गंभीर सवाल।

- कथित भूमिका: अभिनेत्री रिया चक्रवर्ती सहित अन्य लोगों की कथित भूमिका की भी निष्पक्ष जांच की मांग।

- न्यायिक समीक्षा: मृत्यु की परिस्थितियों की नए सिरे से न्यायिक समीक्षा हो।

बिंदु 4: अधिवक्ता का परिचय

याचिका में बताया गया है कि संजीव कुमार सिंह सुप्रीम कोर्ट के सीनियर एडवोकेट हैं और देश के जाने-माने अधिवक्ता स्व. राम जेटमलानी जी के साथ काम कर चुके हैं। इससे पूर्व निर्भया केस, राम मंदिर केस, हाथरस केस, जेसिका लाल केस, बीएमडब्ल्यू केस जैसे कई बड़े मामलों में उनकी भूमिका रही है।

संपादकीय टिप्पणी: सुशांत सिंह राजपूत मामला केवल एक अभिनेता की मृत्यु का मामला नहीं, बल्कि जांच प्रणाली पर जनता के विश्वास का मामला बन गया है। 2020 में सुप्रीम कोर्ट ने ही CBI जांच को सही उठराया था। अब 5 साल बाद फिर न्यायिक आयोग की मांग यह बताती है कि एक वर्ष अभी भी पूर्व जांच से संतुष्ट नहीं है।

राष्ट्रपति सचिवालय द्वारा महाराष्ट्र मुख्य सचिव को निर्देश देना इस बात का संकेत है कि याचिका को संज्ञान में लिया गया है। अब देखा जाएगा कि महाराष्ट्र सरकार और न्यायपालिका इस पर क्या रुख अपनाती है। जनहित यही है कि जांच ऐसी हो जिस पर किसी को सवाल न उठे और वास्तविक स्थिति सामने आ सके।

प्रिंसिपल: विद्यालय की आत्मा को आकार देने वाला



डॉ. विजय गर्ग

विद्यालय केवल कक्षाओं, पाठ्यपुस्तकों, परीक्षाओं और इमारतों का नाम नहीं है। यह एक जीवंत संस्था है, जहाँ युवा मस्तिष्क विकसित होते हैं, चरित्र का निर्माण होता है और सपने आकार लेना शुरू करते हैं। इस शैक्षिक व्यवस्था के केंद्र में प्रिंसिपल खड़ा होता है—केवल प्रशासक के रूप में नहीं, बल्कि एक नेता, मार्गदर्शक और विद्यालय की दृष्टि तथा मूल्यों के संरक्षक के रूप में।

प्रिंसिपल संस्था को दिशा देता है। शिक्षक कक्षा में विद्यार्थियों के साथ सीधे कार्य करते हैं, लेकिन प्रिंसिपल ऐसा वातावरण तैयार करता है, जिसमें शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया बेहतर ढंग से विकसित हो सके। एक अच्छा प्रिंसिपल समझता है कि अनुशासन केवल नियमों और भय पर आधारित नहीं होना चाहिए, बल्कि जिम्मेदारी, सम्मान और आत्म-अनुशासन पर आधारित होना चाहिए।

विद्यालय में नेतृत्व की शुरुआत दृष्टि से होती है। प्रिंसिपल को केवल परीक्षा परिणामों और शैक्षणिक रैंकिंग से आगे देखकर यह महत्वपूर्ण प्रश्न पूछना चाहिए कि विद्यालय किस प्रकार के इंसान तैयार कर रहा है? ज्ञान, कौशल और योग्यताएँ महत्वपूर्ण हैं, लेकिन ईमानदारी, संवेदनशीलता, साहस, सहयोग और सामाजिक जिम्मेदारी भी सार्थक शिक्षा के लिए उतने ही आवश्यक हैं।

प्रिंसिपल शिक्षकों को प्रेरित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिन्हें शिक्षकों को सम्मान, विश्वास और सहयोग मिलता है, वे कक्षा में अधिक रचनात्मकता और उत्साह लाने के लिए प्रेरित होते हैं। इसलिए प्रिंसिपल को टीमवर्क की ऐसी संस्कृति विकसित करनी चाहिए, जिसमें शिक्षक विचार साझा करें, एक-दूसरे से सीखें और विद्यार्थियों के हित में मिलकर कार्य करें।

विद्यार्थी भी प्रिंसिपल को एक आदर्श के रूप में देखते हैं। जो



प्रिंसिपल धैर्यपूर्वक सुनता है, सभी के साथ निष्पक्ष व्यवहार करता है और विद्यार्थियों के लिए सहज रूप से उपलब्ध रहता है, वह विद्यालय में विश्वास की मजबूत भावना पैदा कर सकता है। कभी-कभी प्रिंसिपल के कुछ प्रोत्साहन भरे शब्द किसी संघर्षरत विद्यार्थी को आगे बढ़ने का आत्मविश्वास दे सकते हैं। इसी प्रकार किसी शिक्षक के प्रयासों की सराहना उसके व्यावसायिक उत्साह को नई ऊर्जा दे सकती है।

आधुनिक प्रिंसिपल को पारंपरिक प्रशासन से आगे की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। तकनीक, बदलती पारिवारिक संरचनाएँ, सोशल मीडिया, मानसिक दबाव, प्रतिस्पर्धा और तेजी से बदलते करियर के अवसरों ने शैक्षिक वातावरण को बदल दिया है। इसलिए विद्यालयी नेतृत्व में परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालने की क्षमता, संवेदनशीलता और युवाओं की बदलती आवश्यकताओं को समझने की इच्छा आवश्यक है।

विद्यालय की संस्कृति अक्सर

रोजमर्रा के छोटे-छोटे व्यवहारों में दिखाई देती है—विद्यार्थियों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है, विभिन्न विचारों का किस प्रकार सम्मान किया जाता है, गलतियों को कैसे संभाला जाता है, स्वच्छता को कितना महत्व दिया जाता है और दया व सहयोग को कैसे प्रोत्साहित किया जाता है। इन आदतों को विकसित करने और मूल्यों को दैनिक व्यवहार का हिस्सा बनाने में प्रिंसिपल की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

एक प्रभावी प्रिंसिपल विद्यालय, अभिभावकों और व्यापक समाज के बीच पुल भी बनाता है। जब अभिभावक और शिक्षक खुले मन से संवाद करते हैं और विद्यालय समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझता है, तो शिक्षा अधिक मजबूत होती है। सामुदायिक सेवा, पर्यावरण जागरूकता, सांस्कृतिक गतिविधियाँ और सामाजिक जिम्मेदारी विद्यार्थियों को जिम्मेदार नागरिक बनने में सहायता कर सकती हैं।

अंततः, किसी प्रिंसिपल की विरासत को केवल बनाई गई इमारतों, प्राप्त परिणामों या प्रशासनिक रिकॉर्ड से नहीं मापा जा सकता। इसकी वास्तविक झलक उन विद्यार्थियों के जीवन में दिखाई देती है, जो विद्यालय से आत्मविश्वास, संवेदनशीलता, जिज्ञासा और समाज के लिए सकारात्मक योगदान देने की इच्छा लेकर निकलते हैं।

प्रिंसिपल विद्यालय का प्रबंधन कर सकता है, लेकिन एक प्रेरणादायक प्रिंसिपल उसके चरित्र को आकार देता है। सीखने, सम्मान, अनुशासन और करुणा की संस्कृति विकसित करके प्रिंसिपल विद्यालय की आत्मा का निर्माता बन जाता है। इमारतें बदल सकती हैं, शिक्षक बदल सकते हैं और विद्यार्थियों की पीढ़ियाँ विद्यालय से विदा हो सकती हैं, लेकिन दूरदर्शी नेतृत्व से विकसित मूल्य तकनीकों तक लोगों के जीवन को प्रभावित कर सकते हैं।

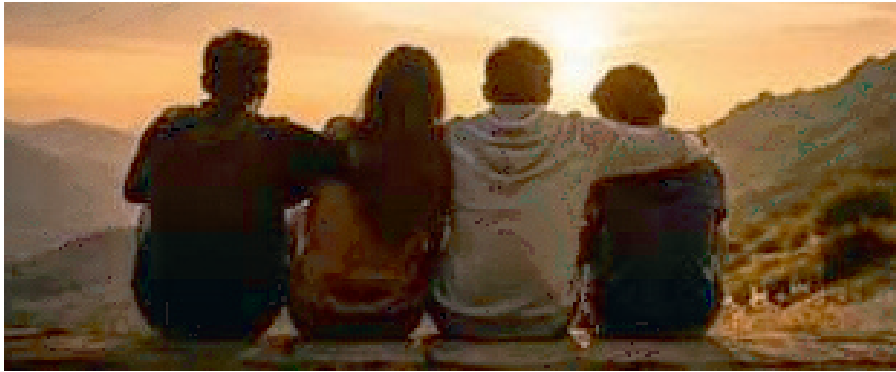


संपादकीय

चिंतन-मनन



रिश्ते: जीवन की अनमोल पूंजी



लेखक डॉ. विजय गर्ग, सेवानिवृत्त प्रिंसिपल परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

मानव जीवन का मूल्य केवल धन, उपलब्धियाँ, संपत्ति या सामाजिक प्रतिष्ठा से नहीं मापा जा सकता। जीवन की वास्तविक समृद्धि उन रिश्तों में निहित होती है, जिन्हें हम बनाते और प्रेम से निभाते हैं। परिवार, मित्र, शिक्षक, सहकर्मी, पड़ोसी और यहाँ तक कि कुछ समय के लिए बने लेकिन अर्थपूर्ण मानवीय संबंध भी जीवन को गर्माहट, उद्देश्य और भावनात्मक शक्ति प्रदान करते हैं।

रिश्ते उन अदृश्य धागों की तरह हैं, जो दिलों को एक-दूसरे से जोड़ते हैं। माता-पिता निःस्वार्थ प्रेम देते हैं, भाई-बहन बचपन की यादें साझा करते हैं, मित्र साथ निभाते हैं और बुजुर्ग अपने अनुभव तथा ज्ञान की विरासत अगली पीढ़ी को सौंपते हैं। हर रिश्ता जीवन की यात्रा में अपना अलग रंग भरता है। ये सभी मिलकर ऐसा सहारा बनाते हैं, जिसे दुनिया की कोई भी दौलत खरीदी नहीं जा सकती।

आज की तेजी से बदलती दुनिया में तकनीक ने संवाद को आसान तो बना दिया है, लेकिन अर्थपूर्ण रिश्तों को बनाए रखना कई बार कठिन हो गया है। लोगों के फोन और सोशल मीडिया पर सैकड़ों संपर्क हो सकते हैं, फिर भी वे अकेलापन महसूस कर सकते हैं। एक संदेश या 'लाइक' हमेशा आमने-सामने की बातचीत, प्रेमपूर्ण व्यवहार या उस व्यक्ति की उपस्थिति का स्थान नहीं ले सकता,

जो हमें वास्तव में समझता हो। मजबूत रिश्तों के लिए समय, विश्वास, सम्मान और समझ की आवश्यकता होती है। वे केवल अपेक्षाओं के सहारे कायम नहीं रह सकते। धैर्यपूर्वक किसी की बात सुनना, कठिन समय में सहायता करना, महत्वपूर्ण अवसरों को याद रखना, गलतियों को क्षमा करना और आधार व्यक्त करना—ये छोटे-छोटे कार्य रिश्तों की डोर को और मजबूत बनाते हैं।

हर रिश्ते में चुनौतियाँ भी आती हैं। विचारों में मतभेद, गलतफहमियाँ और बदलती परिस्थितियाँ जीवन का स्वाभाविक हिस्सा हैं। अहंकार को किसी मूल्यवान रिश्ते को तोड़ने देने के बजाय हमें संवाद, धैर्य और क्षमा के महत्व को समझना चाहिए। हर असहमति का अंत स्थायी अलगाव होना आवश्यक नहीं है।

रिश्तों की वास्तविक कीमत कठिन समय में और अधिक स्पष्ट होती है। सफलता बहुत से लोगों को हमारे करीब ला सकती है, लेकिन सच्चे रिश्ते उस समय सामने आते हैं जब जीवन कठिन हो जाता है। परिवार का सहयोगी सदस्य, वफादार मित्र या सहकर्मी उस समय भावनात्मक शक्ति दे सकता है, जब भौतिक साधन कम हो जाते हैं।

इसके साथ ही, स्वस्थ रिश्ते आपसी सम्मान पर आधारित होने चाहिए। प्रेम का अर्थ नियंत्रण नहीं है और निकटता का अर्थ किसी की व्यक्तिगत सीमाओं की अनदेखी करना नहीं है। हर व्यक्ति को सम्मान, स्वतंत्रता और निजी स्थान की

आवश्यकता होती है। रिश्ते तब और मजबूत होते हैं, जब हम एक-दूसरे की कद्र करते हैं और हर व्यक्ति को उसकी विशिष्टता के साथ स्वीकार करते हैं।

उम्र बढ़ने के साथ जीवन की प्राथमिकताएँ भी बदलती हैं। करियर, जिम्मेदारियाँ और आर्थिक लक्ष्य हमारा बहुत-सा समय ले सकते हैं। लेकिन जीवन के बड़े पछतावों में से एक यह हो सकता है कि हम उन लोगों को पर्याप्त समय न दे पाए, जो हमारे लिए वास्तव में महत्वपूर्ण थे। धन विचारों में मतभेद, गलतफहमियाँ और अपने प्रियजनों के साथ खोया हुआ समय हमेशा वापस नहीं आता।

इसलिए रिश्ते जीवन की अनमोल पूंजी हैं। वे बैंक खातों में दिखाई नहीं देते, लेकिन हमारे भावनात्मक जीवन को समृद्ध बनाते हैं। उनका मूल्य आँकड़ों में नहीं मापा जा सकता, क्योंकि उनका महत्व उस समय सबसे अधिक महसूस होता है, जब हमें प्रेम, समझ, साथ और सहारे की आवश्यकता होती है।

अर्थपूर्ण जीवन केवल अधिक चीजें हासिल करने का नाम नहीं है, बल्कि अधिक प्रेम और परवाह करने का भी नाम है। यदि हम अपने रिश्तों में समय, विश्वास, दया और स्नेह का निवेश करें, तो हम ऐसी पूंजी का निर्माण करते हैं, जो जीवन भर मूल्यवान रहती है। अंततः हमारे पास केवल यह मायने नहीं रखता कि हमने क्या-क्या हासिल किया, बल्कि यह भी महत्वपूर्ण है कि हमने दूसरों के दिलों में कितना प्रेम, सम्मान और कितनी सुंदर यादें छोड़ीं।

गणना का तिलिस्म और लापता मतदाता

लेखक डॉ. विजय गर्ग, सेवानिवृत्त प्रिंसीपल परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

मतदाता सूची केवल नामों की एक सूची नहीं होती। यह वह महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जिसके माध्यम से योग्य नागरिक अपने मतदान के अधिकार का प्रयोग करते हैं। इसलिए जब किसी नागरिक का नाम मतदाता सूची में नहीं मिलता, तो यह मामला केवल आँकड़ों या कागजी कार्रवाई तक सीमित नहीं रहता। इसका सीधा संबंध नागरिक की चुनावी प्रक्रिया में भागीदारी से होता है।

मतदाता सूची तैयार करना और समय-समय पर उसमें संशोधन करना एक महत्वपूर्ण और जटिल प्रशासनिक प्रक्रिया है। भारत में चुनाव आयोग द्वारा चुनाव प्रक्रिया का प्रबंधन किया जाता है, जबकि निर्वाचक पंजीकरण अधिकारी और बूथ लेवल अधिकारी मतदाता सूचियों की तैयारी, सत्यापन और अद्यतन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जब आंकड़े सवाल खड़े करते हैं
मतदाताओं की गणना और मतदाता सूची के संशोधन में नागरिकों से संबंधित जानकारी एकत्र करना, उसकी जांच करना और आवश्यकता के अनुसार उसे अद्यतन करना शामिल होता है। विशेष गहन पुनरीक्षण जैसी प्रक्रियाओं के दौरान बूथ लेवल अधिकारी घर-घर जाकर जानकारी का सत्यापन कर सकते हैं, फॉर्म वितरित कर सकते हैं और उन्हें एकत्र कर सकते हैं।

इस प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य योग्य नागरिकों को मतदाता सूची में शामिल करना तथा अयोग्य या अस्तित्वहीन प्रविष्टियों को ठीक करना होता है।

लेकिन मतदाताओं की गणना केवल साधारण गिनती का काम नहीं है। लोग एक शहर से दूसरे शहर या एक राज्य से दूसरे राज्य में चले जाते हैं। कुछ परिवार अपना निवास बदल लेते हैं, जबकि कई विद्यार्थी या नौकरीपेशा लोग लंबे समय तक अपने मूल स्थान से दूर रहते हैं। इसके अलावा, व्यक्तिगत विवरणों में बदलाव, दोहराई गई प्रविष्टियाँ या अन्य प्रशासनिक कारणों से भी सूची में संशोधन की आवश्यकता पड़ सकती है।

इसलिए मतदाता सूची की शुद्धता बनाए रखना एक निरंतर प्रशासनिक चुनौती है।

“लापता” मतदाता कौन है ?
“लापता मतदाता” शब्द विभिन्न परिस्थितियों को दर्शा सकता है और हर मामले को अपने आप किसी गलती या अनियमितता का प्रमाण नहीं माना जा सकता।

कोई व्यक्ति अपना निवास किसी अन्य निर्वाचन क्षेत्र में स्थानांतरित कर चुका हो सकता है। किसी मतदाता ने आवश्यक फॉर्म जमा न किया हो। किसी नाम पर सत्यापन, दोहराव या अन्य संशोधन प्रक्रिया का प्रभाव पड़ा हो। कई बार किसी योग्य नागरिक को पता चल सकता है कि उसका नाम संबंधित मतदाता सूची में मौजूद नहीं है।

इसलिए किसी एक सूची से नाम गायब होने को तुरंत किसी गलत कार्रवाई का प्रमाण नहीं माना जाना चाहिए। प्रत्येक मामले का सत्यापन आवश्यक है।

गणना प्रक्रिया का महत्व
मतदाता सूची के संशोधन का उद्देश्य इसे अधिक से अधिक सटीक और अद्यतन बनाए रखना है। एक सही मतदाता सूची मतदाताओं और चुनाव प्रशासन, दोनों के लिए महत्वपूर्ण है। पुरानी सूची में उन लोगों के नाम रह सकते हैं, जो अपना निवास बदल चुके हैं या जिनकी मृत्यु हो चुकी है। दूसरी ओर, यदि सूची को उचित रूप से अद्यतन न किया जाए, तो नए योग्य नागरिकों के नाम शामिल होने से रह सकते हैं।

इसलिए मुख्य चुनौती दोनों उद्देश्यों के बीच संतुलन बनाए रखना है—गलत या अमान्य प्रविष्टियों को हटाना और किसी भी योग्य नागरिक को गलती से मतदान के अधिकार से वंचित न होने देना।

नागरिकों को भी जिम्मेदारी मतदाता सूची की शुद्धता केवल प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं है। नागरिकों को भी समय-समय पर अपने मतदाता विवरण की जांच करनी चाहिए।

चुनाव आयोग द्वारा मतदाता सूची में अपना नाम खोजने, नया पंजीकरण कराने, आवेदन की स्थिति जांचने और विवरणों में संशोधन करने के लिए ऑनलाइन सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं।

यदि कोई योग्य नागरिक मतदाता के रूप में पंजीकृत नहीं है या उसका नाम सूची में नहीं मिलता, तो उसे उपलब्ध निधारित प्रक्रिया के अनुसार पंजीकरण या सुधार के लिए आवेदन करना चाहिए।

मतदाता जागरूकता इसलिए बहुत महत्वपूर्ण है। यदि चुनाव के दिन ही यह पता चले कि नाम सूची में नहीं है, तो समस्या उत्पन्न हो सकती है। इसलिए पहले से अपने विवरणों की जांच करना अधिक समझदारीपूर्ण है।

तकनीक और पारदर्शिता

मतदाता सूची केवल नामों की सूची नहीं, यह आपके अधिकार की पहचान है

मतदाता सूची वह महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जिससे योग्य नागरिक अपने मतदान के अधिकार का प्रयोग करते हैं। जब किसी का नाम सूची में नहीं मिलता, तो यह केवल कागजी कार्रवाई नहीं, बल्कि उसकी लोकतांत्रिक भागीदारी से जुड़ा मामला है।

कौन बनाता और संभालता है ?

- भारत निर्वाचन आयोग चुनाव प्रक्रिया का प्रबंधन
- निर्वाचक पंजीकरण अधिकारी मतदाता सूची की तैयारी और संशोधन
- बूथ लेवल अधिकारी घर-घर सत्यापन, फॉर्म वितरण और संशोधन

जब आंकड़े सवाल खड़े करते हैं

लोग एक शहर से दूसरे शहर या राज्य में जा सकते हैं, परिवार का पता बदल सकता है, विद्यार्थी या नौकरीपेशा लोग लंबे समय तक दूर रह सकते हैं। व्यक्तिगत विवरणों में बदलाव, दोहराई गई प्रविष्टियाँ या अन्य कारणों से संशोधन आवश्यक हो सकता है।

मेरा वोट मेरा अधिकार

डिजिटल तकनीक ने मतदाता सूची प्रबंधन में कई बदलाव किए हैं। अब नागरिक घर बैठे अपना नाम खोज सकते हैं, आवेदनों की स्थिति देख सकते हैं और मतदाता सेवाओं से संबंधित अनेक कार्य ऑनलाइन कर सकते हैं।

तकनीक प्रक्रिया को आसान और तेज बना सकती है, लेकिन केवल तकनीक से शुद्धता की गारंटी नहीं हो सकती। आँकड़ों को सही ढंग से एकत्र करना, उनका सत्यापन करना, उन्हें अद्यतन करना और नागरिकों तक स्पष्ट जानकारी पहुँचाना भी उतना ही आवश्यक है।

इसके साथ ही नागरिकों के लिए अपनी शिकायतें, दावे और आपत्तियाँ दर्ज कराने की स्पष्ट और सरल प्रक्रिया उपलब्ध होनी चाहिए।

आँकड़ों के पीछे एक ईंसान
हर मतदाता आँकड़े के पीछे एक ईंसान होता है।

मतदाता सूची में लाखों नाम हो सकते हैं,



शुद्ध मतदाता सूची = मजबूत लोकतंत्र

“लापता” मतदाता कौन है ?

- निवास बदल चुका हो
- आवश्यक फॉर्म जमा न किया हो
- सत्यापन, दोहराव या संशोधन का प्रभाव हो
- किसी योग्य नागरिक को पता चले कि उसका नाम सूची में नहीं है।

हर मामले का सत्यापन आवश्यक है।

गणना प्रक्रिया का महत्व

- पुरानी सूची में मृत या स्थानांतरित लोगों के नाम रह सकते हैं।
- उचित संशोधन न हो तो नए योग्य नागरिक छूट सकते हैं।
- चुनौती है - गलत प्रविष्टियाँ हटाना और किसी भी योग्य नागरिक को मतदान से वंचित न होने देना।



आँकड़ों के पीछे एक ईंसान

हर नाम एक नागरिक का प्रतिनिधित्व करता है - उसकी पहचान, उसकी आवाज़, उसका अधिकार।

बुजुर्गों, प्रवासी मजदूरों, विद्यार्थियों, दिव्यांग, विधवा और बार-बार निवास बदलने वाले लोगों के लिए विशेष सहायता और स्पष्ट जानकारी ज़रूरी है।

शुद्धता भी, समावेश भी

- सिर्फ बड़ी या छोटी सूची नहीं, बल्कि वाहिए -
- सटीक सत्यापन
- पारदर्शी प्रक्रिया
- आसान दावा/आपत्ति
- तेज सुधार
- स्पष्ट जानकारी

शुद्ध मतदाता सूची सशक्त भारत



लेकिन प्रत्येक नाम ऐसे नागरिक का प्रतिनिधित्व करता है, जिसका चुनाव प्रक्रिया में भाग लेने से सीधा संबंध है। इसलिए चुनाव प्रबंधन में तेजी के साथ संवेदनशीलता और सावधानी भी आवश्यक है।

बुजुर्गों, प्रवासी मजदूरों, विद्यार्थियों, दिव्यांग व्यक्ति और बार-बार निवास बदलने वाले लोगों के लिए विशेष सहायता तथा स्पष्ट जानकारी महत्वपूर्ण हो सकती है।

जब किसी नागरिक का नाम सूची में नहीं मिलता, तो उसे यह पता चलना चाहिए कि समस्या क्या है, किन दस्तावेजों या प्रक्रियाओं की आवश्यकता है और सुधार के लिए कौन-सा रास्ता उपलब्ध है।

शुद्धता भी, समावेश भी
मतदाता गणना के बारे में चर्चा अक्सर आँकड़ों पर केंद्रित रहती है—कितने नाम जोड़े गए, कितने हटाए गए और कितने फॉर्म प्राप्त हुए।

ये आँकड़े महत्वपूर्ण हैं, लेकिन वे पूरी तस्वीर नहीं बताते।

एक प्रभावी मतदाता सूची संशोधन प्रक्रिया की वास्तविक परीक्षा इस बात से होनी चाहिए कि सत्यापन कितना सटीक है, प्रक्रिया कितनी पारदर्शी है, दावे और आपत्तियाँ दर्ज कराना कितना आसान है, सुधार कितनी जल्दी किए जाते हैं और नागरिकों को जानकारी कितनी स्पष्टता से मिलती है।

उद्देश्य केवल बड़ी या छोटी मतदाता सूची बनाना नहीं होना चाहिए। उद्देश्य होना चाहिए—सटीक, पारदर्शी और समावेशी मतदाता सूची।

लोकतंत्र एक नाम से शुरू होता है
चुनावी प्रक्रिया अंततः एक बहुत सरल बात से शुरू होती है—मतदाता सूची में नागरिक का सही नाम।

यह नाम नागरिक को चुनाव में भाग लेने के अधिकार से जोड़ता है। यदि किसी योग्य नागरिक

का नाम गायब है, तो उस मामले पर ध्यान देना और उपलब्ध प्रक्रिया के माध्यम से सुधार का अवसर देना आवश्यक है। इसी प्रकार यदि कोई प्रविष्टि दोहराई हुई या अमान्य है, तो उसकी भी उचित जांच और संशोधन आवश्यक है।

इसलिए मतदाता गणना की वास्तविक चुनौती शुद्धता और समावेश के बीच संतुलन बनाए रखने में है।

लापता मतदाताओं का प्रश्न रहस्य बना रहने की आवश्यकता नहीं है। पारदर्शी प्रक्रिया, जिम्मेदार प्रशासन, सक्रिय नागरिकता और समय-समय पर मतदाता विवरणों की जांच के माध्यम से मतदाता सूचियों को अधिक सटीक और विश्वसनीय बनाया जा सकता है।

मतदाताओं की गणना करना प्रशासनिक कार्य है; प्रत्येक योग्य नागरिक की सही गणना और उसकी भागीदारी सुनिश्चित करना लोकतांत्रिक जिम्मेदारी है।

महिलाओं के व्यक्तिगत टाइम ट्रायल में झज्जर की पारुल ने जीता स्वर्ण



अस्मिता महिला साइकलिंग लीग में प्रदेशभर की महिला खिलाड़ियों ने दिखाया दमखम

राजेश सलूजा, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक हरियाणा कुरुक्षेत्र

अस्मिता महिला साइकलिंग लीग के तहत आयोजित साइकलिंग प्रतियोगिता में प्रदेशभर से पहुंची महिला खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में महिलाओं के व्यक्तिगत टाइम ट्रायल मुकामलों में खिलाड़ियों ने निर्धारित दूरी को कम से कम समय में पूरा करने के लिए पूरा दमखम लगाया।

महिला एलटी वर्ग की १० किलोमीटर व्यक्तिगत टाइम ट्रायल स्पर्धा में झज्जर की पारुल ने शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान हासिल कर स्वर्ण पदक जीता। हिसार की पुष्पा देवी ने दूसरा स्थान हासिल किया, जबकि कुरुक्षेत्र की नीता देवी तीसरे स्थान पर रहीं।

इसी प्रकार महिला जूनियर वर्ग की 10 किलोमीटर व्यक्तिगत टाइम ट्रायल स्पर्धा में झज्जर की कोमल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। करनाल की एंजल राणा ने दूसरा तथा कुरुक्षेत्र की निविता ने तीसरा स्थान हासिल किया। हरियाणा राज्य साइकलिंग संघ के महासचिव नीरज तंदर ने कहा कि अस्मिता महिला साइकलिंग लीग महिला खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने और अपने बढ़ने का बेहतर

अवसर प्रदान कर रही है। ऐसी प्रतियोगिताओं के माध्यम से प्रदेश में महिला साइकलिंग खिलाड़ियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। हरियाणा की महिला खिलाड़ी अपनी प्रतिभा और मेहनत के बलबूते राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी अलग पहचान बना रही हैं। प्रतियोगिता के सफल आयोजन में पीसीपी, साइकलिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया से जुड़े गुरनाम सिंह, कोच पंजाब सिंह, निर्मल सिंह, गौरव वर्मा, आशु शर्मा, पवन कुमार, नरदीप सिंह, मोहित, सुनील कुमार, नीरज देवी, बबिता रानी, अजीत सिंह तथा कोच देवी सखित आयोजन से जुड़े अन्य प्रशिक्षकों और सहयोगियों का योगदान रहा। प्रतियोगिता के दौरान खिलाड़ियों को तकनीकी मार्गदर्शन और आवश्यक सल्योग भी प्रदान किया गया।

सेवा संकल्प अभियान के तहत बरवाला में भाषण एवं पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित

कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा ने विद्यार्थियों की प्रतिभा का अवलोकन कर रचनात्मक सोच और हुनर को प्रोत्साहित किया

राजेश सलूजा, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक हरियाणा हिसार

सेवा संकल्प अभियान के तहत लोक निर्माण एवं जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर गंगवा ने शनिवार को बरवाला स्थित डी.एम. सीनियर सेकेंडरी स्कूल में आयोजित भाषण एवं पेंटिंग प्रतियोगिता कार्यक्रम में शिरकत की। इस अवसर पर उन्होंने प्रतिभाशाली विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किए गए ओजस्वी भाषणों एवं सुंदर चित्रकारी का अवलोकन किया और उनकी प्रतिभा की सराहना की। कैबिनेट मंत्री ने विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच, प्रतिभा और उत्साह



देखकर उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि हमारे युवा और विद्यार्थी ही देश के उज्ज्वल भविष्य की नींव हैं। विद्यार्थियों की प्रतिभा को निखारने के लिए उन्हें उचित मंच और प्रोत्साहन प्रदान करना हम सभी की जिम्मेदारी है। भाषण एवं पेंटिंग जैसी प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, सृजनात्मक क्षमता और अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा ने कहा कि सेवा संकल्प अभियान का उद्देश्य प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 25 वर्षों के जनसेवा के संकल्प को जन-जन तक पहुंचाना तथा सेवा, सुशासन और जनभागीदारी की भावना को और अधिक मजबूत करना है। इस अभियान के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों को विकास, जनकल्याण और राष्ट्रनिर्माण की गतिविधियों से जोड़ने का कार्य किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि युवाओं की ऊर्जा, विद्यार्थियों की प्रतिभा और समाज की सक्रिय भागीदारी से ही विकसित एवं आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का संकल्प साकार होगा। विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ रचनात्मक गतिविधियों, सामाजिक सरोकारों और राष्ट्रसेवा के लिए प्रेरित करना समय की आवश्यकता है। उन्होंने प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि प्रत्येक विद्यार्थी में आगे बढ़ने और अपनी अलग पहचान बनाने की क्षमता है। आवश्यकता केवल उन्हें सही दिशा, अवसर और निरंतर प्रोत्साहन देने की है।

इस अवसर पर पूर्व चैयरमैन सतबीर वर्मा, रणधीर धीरू, रमेश अध्यक्षनगर परिषद बरवाला सहित अन्य गणमान्य नागरिक एवं बरवाला वासी उपस्थित रहे।



ट्रंप ने लिंडसे ओ. ग्राहम रूस-ईरान प्रतिबंध अधिनियम 2026 पर किए हस्ताक्षर 100% टैरिफ की तलवार नहीं, पर अधिकार की मिसाइल; भारत के रुपया, शेयर बाजार, निर्यात और महंगाई पर क्या होगा असर? कानून 18-19 सितंबर को लागू, रूस के टॉप-5 तेल खरीदारों पर 100% तक शुल्क का अधिकार भारत पर आज से टैरिफ नहीं, पर ऊर्जा-सुरक्षा और व्यापार नीति की नई परीक्षा

शनिवार को चौथे दिन जैन मंदिरों में गुंजे “उत्तम शौच धर्म” के जयकारे, रविवार को मनाया जाएगा “उत्तम सत्य धर्म”

---- “सादा जीवन, उच्च विचार” ही उत्तम शौच धर्म का संदेश रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

जयपुर। दिगंबर जैन समाज के सबसे पवित्र पर्वों में से एक दशलक्ष महापर्व के शुभावसर पर राजधानी जयपुर सहित देश-दुनिया के जैन मंदिरों में शनिवार को दशलक्ष धर्म के चतुर्थदिवस “उत्तम शौच धर्म” की आराधना श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ की गई। इस दौरान श्रावक-श्राविकाओं ने जिनालयों में अंतर्मन की शुद्धता के साथ तीर्थंकर भगवानों का श्रद्धापूर्वक गुणगान किया। अष्टद्वयों के साथ विधान-पूजन कर अर्घ्य समर्पित किए गए तथा धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से कर्मों की निर्जरा की भावना व्यक्त की गई।

शनिवार को जैन धर्म के आठवें तीर्थंकर भगवान पुण्यदत्त स्वामी का निर्वाण कल्याणक पर्व भी श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस शुभ अवसर पर जैन मंदिरों में मंगलाष्टक, जयमाला पाठ एवं निर्वाणकांड पाठ का वाचन किया गया। मंत्रोच्चार के साथ भगवान के चरणों में निर्वाण लड्डू समर्पित किए गए। अखिल भारतीय दिगंबर जैन युवा एकता संघ के अध्यक्ष अभिषेक जैन बिट्टू ने “उत्तम शौच धर्म” के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि “शौच भावना हमें अंतर्मन की पवित्रता और संतोष का मार्ग दिखाती है। प्राणी पेट तो भर सकता है, लेकिन पेट नहीं भर सकता। इससे बावजूद आज मनुष्य केवल अपनी ‘पेटी’ भरने में लगा हुआ है। इसी असीम संग्रह की प्रवृत्ति के कारण मन की पवित्रता नष्ट होती जा रही है और व्यक्ति

‘99 के चक्कर’ में उलझता जा रहा है।” उन्होंने कहा कि “ईमानदारी से पेट भरा जा सकता है, लेकिन तिजोरी भरने के लिए यदि बेईमानी, अन्याय और अनैति का सहारा लिया जाए तो उस धन की शांति और स्थायित्व नहीं रहता। अधर्म से अर्जित द्रव्य कभी बीमारी के इलाज में, कभी आपर्शजन में, कभी कानूनी परेशानियों में अथवा अन्य संकटों में नष्ट हो जाता है। लोभ के साथ मनुष्य के जीवन में अनेक बुराईयां जुड़ती चली जाती हैं।” बिट्टू ने कहा कि “हमारी आवश्यकताएं सीमित हैं तो हमें लोभ का सहारा नहीं लेना पड़ेगा। संतोषी व्यक्ति परिग्रह को सीमित रखता है और ‘सादा जीवन, उच्च विचार’ के आदर्शों को अपनाकर जीवन जीता है। हमारे आचार्यों का संदेश है कि अज्ञानतावश एक बार ठगा जाना उतना बुरा नहीं, जितना

लालचवश दूसरों को ठगना। गुलत संस्कारों का बीज यदि समय रहते नहीं रोका जाए तो व्यक्ति लंबे समय तक गुलत कलाकों में उलझा रह सकता है। इसलिए सही मार्गदर्शन और संस्कारों की आवश्यकता है।” उन्होंने कहा कि “‘और अधिक चाहिए’ की प्रवृत्ति को छोड़कर संतोष को धारण करना चाहिए। जीवन में सद्गुणों की प्राप्ति अधिक से अधिक, यह भावना निरंतर रहती रहे और परिग्रह के संचय की भावना कम से कम हो—यही उत्तम शौच धर्म का सावह है।” उन्होंने बताया कि रविवार को दशलक्ष महापर्व के पांचवें दिन “उत्तम सत्य धर्म” की आराधना की जाएगी। इस अवसर पर जैन मंदिरों में विधान-पूजन सहित विभिन्न धार्मिक आयोजन होंगे।

विविध विशेष

अमिटी विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन विजिगीषु-2026 का शुभारंभ

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक नोएडा,

अमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज द्वारा आयोजित सातवें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन ‘विजिगीषु-2026’ का आयोजन आज अमिटी विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश परिसर में किया गया। इस वर्ष के सम्मेलन का मुख्य विषय ‘दक्षिण-पूर्व एशिया और ग्लोबल साउथ: बहुध्रुवीय विश्व में उभरती सुरक्षा, स्थिरता और रणनीतिक गतिशीलता’ रहा।

सम्मेलन में देश-विदेश के राजनयिक, न्यायविद, शिक्षाविद, शोधार्थी और नीति विशेषज्ञों ने भाग लिया। सम्मेलन के मुख्य तथ्य 1. आयोजन: 7वां संस्करण, विजिगीषु 2026 2. आयोजक: अमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, अमिटी यूनिवर्सिटी उत्तर प्रदेश 3. तिथि व स्थान: 18 सितम्बर 2026, अमिटी कैम्पस, नोएडा 4. नॉलेज पार्टनर: रेड लैंटर्न एनालिटिक्स, इग्नू (IGNOU), सेंटर फॉर ग्लोबल



अफेयर्स एंड लीडरशिप स्टडीज 5. मंच पर प्रमुख उपस्थिति: न्यायमूर्ति राजेश टंडन, राजदूत राम्मू रवि सहित अन्य गणमान्य अतिथि मुख्य बिंदु और चर्चा के विषय 1. न्यायमूर्ति राजेश टंडन का संबोधन: अपने संबोधन में न्यायमूर्ति टंडन ने कहा कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में अंतरराष्ट्रीय कानून और न्यायिक सहयोग की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। ग्लोबल साउथ के देशों को नियम आधारित विश्व व्यवस्था के लिए एकजुट



होना होगा।

2. दक्षिण-पूर्व एशिया का महत्व: वक्ताओं ने कहा कि इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में आसियान देशों की केंद्रीयता भारत की एकट ईस्ट नीति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। सुरक्षा, समुद्री व्यापार और आपूर्ति श्रृंखला में सहयोग पर विशेष जोर दिया गया। 3. स्थिरता और विकास: सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन, सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) और ऊर्जा सुरक्षा पर गहन चर्चा हुई। विशेषज्ञों ने कहा कि ग्लोबल साउथ के देशों को विकास और पर्यावरण

के बीच संतुलन बनाना होगा। 4. युवाओं की भागीदारी: बड़ी संख्या में छात्रों और शोधार्थियों की उपस्थिति ने सम्मेलन को भविष्योन्मुख बनाया। छात्रों ने अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में भारत की भूमिका पर प्रश्नोत्तर सत्र में भाग लिया। सम्मेलन का समापन अतिथियों के सम्मान और स्मृति चिह्न भेंट के साथ हुआ। आयोजकों ने बताया कि इस प्रकार के मंच भारत को वैश्विक बैड्रिक नेतृत्व के रूप में स्थापित करने में सहायक हैं। > संपादकीय टिप्पणी के लिए: इस सम्मेलन से यह स्पष्ट संदेश गया है कि

गणतंत्र दिवस परेड-2027 के लिए 16 NSS स्वयंसेवक चयनित

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक बोधगया

मगध विश्वविद्यालय, बोधगया में पूर्व गणतंत्र दिवस शिबिर, लखनऊ तथा गणतंत्र दिवस परेड-2027 में प्रतिभागिता के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) के स्वयंसेवकों के चयन हेतु विश्वविद्यालय स्तरीय प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों से पहुंचे स्वयंसेवकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

प्रतियोगिता के दौरान स्वयंसेवकों की प्रतिभा, नेतृत्व क्षमता, अनुशासन, शारीरिक दक्षता, सांस्कृतिक प्रतिभा तथा NSS गतिविधियों के प्रति प्रतिबद्धता का मूल्यांकन किया गया। चयन प्रक्रिया के बाद 08 महिला एवं 08 पुरुष स्वयंसेवकों सहित कुल 16 स्वयंसेवकों का चयन किया गया।

कुलपति प्रो. दिलीप कुमार केशरी ने चयनित स्वयंसेवकों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि



NSS युवाओं में राष्ट्रप्रेम, अनुशासन, नेतृत्व एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। उन्होंने चयनित स्वयंसेवकों को आगामी प्रशिक्षण में बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित किया। कुलसचिव डॉ. बी. के. मंगलम ने कहा कि चयन विद्यार्थियों की प्रतिभा, अनुशासन और समर्पण का परिचायक है। उन्होंने सभी चयनित स्वयंसेवकों को बधाई दी।

NSS समन्वयक डॉ. पिंटू कुमार ने कहा कि

चयनित स्वयंसेवक राष्ट्रीय स्तर पर मगध विश्वविद्यालय एवं बिहार का गौरव बढ़ाएंगे। चयन समिति में वासुदेव प्रसाद, डॉ. राजेश कुमार मिश्रा, डॉ. सुस्मिता कर, डॉ. वंदना कुमारी, एनसीसी टाटालियन के पीआई स्टॉफ नरेंद्र कुमार एवं रवि रंजन शामिल रहे। समिति सदस्यों ने चयनित स्वयंसेवकों को बधाई देते हुए आगामी प्रशिक्षण एवं परेड की तैयारियों पर विशेष ध्यान देने का आह्वान किया।

आर्थिक मोर्चा - वैश्विक प्रतिबंध और भारत

लेखक: एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी
प्रस्तुतकर्ता पिकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता

19 सितंबर केवल एक और कारोबारी दिन नहीं 19 सितंबर 2026 का दिन वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए केवल एक और कारोबारी दिन नहीं है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 18 सितंबर (भारतीय समय 19 सितंबर रात) को Lindsey O. Graham Sanctioning Russia and Iran Act of 2026 (H.R. 5334) पर हस्ताक्षर कर इसे कानून बना दिया है। क्हाइट हाउस ने इसकी पुष्टि की है।

यह कानून रूस के ऊर्जा, रक्षा उद्योग और उसके शैडो फ्लीट टैंकरों पर प्रतिबंध कड़ा करता है और ईरान प्रतिबंधों को 5 साल के लिए बढ़ाता है। सबसे महत्वपूर्ण भ्रम का निवारण: यह कानून भारत पर आज से 100% टैरिफ नहीं लगाता। यह राष्ट्रपति को अधिकार देता है कि वह रूस का कच्चा तेल/गैस खरीदने वाले 5 सबसे बड़े आयातकों पर 100% तक शुल्क लगा सके, साथ ही शर्तों के साथ छूट (Waiver) का अधिकार भी देता है।

मुख्य बिंदुवार - कानून क्या कहता है ?
तथ्यों के साथ बिंदु 1: कानून के मुख्य प्रावधान - नाम: लिंडसे ओ. ग्राहम अधिनियम -

दिवंगत सीनेटर लिंडसे ग्राहम के सम्मान में, जिनका 11 जुलाई 2026 को निधन हुआ। - पास कैसे हुआ: सीनेट में 7 अगस्त को 86-11 वोट से, हाउस में 16 सितंबर को 262-159 वोट से पास। - रूस पर: रूसी अधिकारियों, बैंकों, ओलिगार्क्स, शैडो फ्लीट पर प्रतिबंध, रूस से आयात पर 500% तक शुल्क का प्रावधान। - भारत-चीन पर असर वाला क्लॉज: राष्ट्रपति को अधिकार कि वह रूस के तेल/गैस के टॉप-5 खरीदार देशों या प्रतिबंधों से बचने में मदद करने वाले देशों के सामान पर 100% तक लक्षित शुल्क लगा सके। चीन और भारत इसके प्राथमिक दायरे में हैं। जापान, फ्रांस जैसे कम आयात वाले देश छूट के दायरे में आ सकते हैं। - राष्ट्रपति को Waiver अधिकार: यदि देश रूसी गैस का 15% से कम आयात करता है और घटाने के कदम उठा रहा है, तो राष्ट्रीय हित में छूट दी जा सकती है। बिंदु 2: भारत के सामने दोहरी चुनौती - निर्यात चमका, पर जोखिम बढ़ा - अच्छी खबर: वाणिज्य मंत्रालय के अनुसार अगस्त 2026 में भारत का वस्तु निर्यात 43.81 अरब डॉलर (पिछले साल 34.74 अरब डॉलर) - 26% से अधिक वृद्धि। कुल वस्तु-सेवा निर्यात 82.68 अरब डॉलर अनुमानित। अप्रैल-अगस्त में 215.91 अरब डॉलर। इंजीनियरिंग और

इलेक्ट्रॉनिक्स में मजबूती। - चुनौती: भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा तेल आयातक है। रूस 2022 के बाद भारत का सबसे सस्ता कूड स्रोत बना। यदि वैकल्पिक महंगे स्रोत लेने पड़ें तो आयात बिल बढ़ेगा। और यदि रूस से खरीद जारी रखी तो अमेरिकी बाजार में निर्यात पर शुल्क का दबाव बन सकता है। यहीं व्यापार नीति और ऊर्जा नीति टकराती हैं। बिंदु 3: रुपया, शेयर बाजार और महंगाई - समग्र विश्लेषण 1. रुपया: 19 सितंबर को रुपया 95.87 प्रति डॉलर पर बंद। RBI की डॉलर बिक्री से सहारा, पर मजबूत डॉलर और आयात मांग से दबाव। वित्त वर्ष में अब तक 1.05% कमजोर। यदि तेल महंगा होता है तो डॉलर मांग बढ़ेगी, रुपया 96 की ओर फिसल सकता है। 2. शेयर बाजार: 18 सितंबर को सेंसेक्स 19.63 अंक गिरकर 74,294.96, निफ्टी 75.80 अंक बढ़कर 23,346.40 - मिश्रित बंद। व्यापक बाजार स्थिर, पर यह जोखिम खत्म होने का संकेत नहीं। कच्चा तेल, अमेरिकी बॉन्ड यील्ड, विदेशी निवेशक (FII) की चाल बाजार तय करेगी। ऊर्जा-खपत वाले सेक्टर - एविएशन, केमिकल, लॉजिस्टिक्स पर लागत दबाव आ सकता है। 3. महंगाई: तेल महंगा तो परिवहन, प्लास्टिक, उर्वरक, विनिर्माण की लागत बढ़ेगी। कमजोर रुपया आयातित महंगाई

बढ़ाएगा। यदि तेल नरम रहा तो राहत मिलेगी। बिंदु 4: भारत के लिए आगे की 5 निगरानी वाली बातें 1. अमेरिकी प्रशासन Waiver का उपयोग कैसे करता है ? 2. भारत रूस से आयात घटाता है या विविधीकरण करता है ? 3. कच्चा तेल \$80-90 के बैंड में टिकता है या नहीं ? 4. रुपया 96 के मनोवैज्ञानिक स्तर पर RBI कैसे हस्तक्षेप करता है ? 5. विदेशी निवेशकों का भारत में प्रवाह - क्या भारत को 'चाइना प्लस वन' का लाभ मिला रहेगा ? संपादकीय निष्कर्ष - तलवार चेतवनी है, कार्रवाई नहीं एडवोकेट भावनानी का मत सही है - यह कानून संभावित तलवार है, तत्काल वार नहीं। भारत के लिए यह रणनीतिक स्वायत्तता, ऊर्जा सुरक्षा और निर्यात हितों के बीच संतुलन की परीक्षा है। अवसर भी है - वैश्विक सप्लाय चैन विविधीकरण में भारत इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मा, इंजीनियरिंग में हिस्सेदारी बढ़ा सकता है, जैसा अगस्त के आंकड़े दिखाते हैं। निवेशकों के लिए संदेश - एक दिन की तेजी-गिरावट पर नहीं, कंपनियों की आयात-निर्यात, अमेरिकी बाजार में हिस्सेदारी और ऊर्जा लागत जैसे फंडामेंटल पर ध्यान दें।

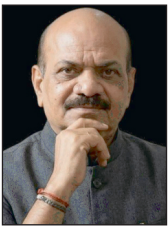
कालेज चीफ (प्रिंसिपल)

भूपेंद्र सारस्वत 'सारथी' वै0 वित्तक व विश्लेषक.

एक स्कूल के प्रिंसिपल महोदय का रिटायरमेंट था। सभी कर्मचारी और स्टूडेंट खुश थे, कि अच्छा होगा आज से इस खड्डस प्रिंसिपल से पिछा छूटेगा.....?? इसलिए रिटायरमेंट पर किसी ने भी रप्रिंसिपल को कोई गिफ्ट नहीं दिया। बस एक शॉल उड़ा कर औपचारिकता निभाई गई। उदास मन से प्रिंसिपल स्कूल छोड़कर चले गए। मगर रिटायरमेंट समाप्त के बाद जब बच्चे अपनी कक्षाओं में पहुंचे और स्टाफ जब ऑफिस में पहुंचा, तो उन्होंने देखा हर बच्चे की टेबल पर एक लेपटॉप पड़ा था।

और स्कूल के हर टीचर के लिए भी ऑफिस में लेपटॉप रखा था, साथ में एक चिट्ठी लिखी मिली जिस पर लिखा था: " इस दुनिया में अकेला हूँ। मेरा कोई खर्चा नहीं है, बुढ़ापे के अंतिम दिनों के लिए पेंशन की राशि काफी है। जमा फंड के जो अस्सी लाख रुपये मिले वो बस मैंने आप लोगों पर खर्च कर दिये हैं। " क्योंकि आप

लोग ही मेरा परिवार हो ! रू मेरे कड़े अनुशासन के कारण आप लोगों को परेशानी हुई, इसके लिए सबसे क्षमा कारता हूँ, " पद और विद्यालय की गरिमा बनाए रखने के लिए थोड़ा टाइट होना पड़ता है ! वरना मैं भी ईसान हूँ, मेरे अंदर भी संवेग है, मुझे भी प्रेम चाहिए। मुझे भी अपने चाहिए, मगर मेरा अपना कोई परिवार नहीं है !



“ मैं तुम सबसे बहुत प्यार करता हूँ, " और ईश्वर से तुम सबकी उन्नति और कुशलता के लिए प्रार्थना करता हूँ, पत्र पढ़कर पूरा स्टाफ बच्चे रोने लगे। जानते हो हर घर में ऐसा ही एक प्रिंसिपल होता है ! सबका भला सोचता है फिर भी सबको कड़वा लगता है ! अखबार, मैगजीन आदि गवाह हैं, पढ़िये: संस्था चीफ यदि स्वयं अनुशासित नहीं है, तो उपक्रम का बड़ा ग़रक ही है ! पचास-साठ के दशक के न्यूज पेपर ही उठा के देख लीजिए, अनियमितताओं पर कठोर कार्यवाही सुनिश्चित थी ! अधिकांश अखबार पाठकों के पत्रों की वरीयता देते थे, समस्याओं के निराकरण में सहयोगी भूमिका निभाते थे ! !

लाखों आउटसोर्सिंग कर्मियों में असमंजस

वेतन की प्रभावी तिथि और नई दरें तत्काल स्पष्ट करे सरकार : विनोद इलाहाबादी 21 अगस्त से 20 सितंबर का वेतन किस दर से बनेगा, विभागों में भी भ्रम संजय सिंह, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक आगरा



प्रदेश के लाखों आउटसोर्सिंग कर्मिकों के वेतन वृद्धि का लाभ श्रम में तटका है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा उतर प्रदेश आउटसोर्सिंग कर्मचारी सेवा निगम के पोर्टल और लोगों का लोकार्पण किए 15 दिन से अधिक हो गए हैं, लेकिन बड़े हुए वेतन को लेकर शासनादेश जारी नहीं हुआ है। इससे कर्मचारियों के साथ-साथ विभागों में भी वेतन निर्धारण को लेकर असमंजस बना हुआ है। उतर प्रदेश स्थानीय कर्मचारी महासंघ के वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष विनोद इलाहाबादी ने प्रदेश सरकार से मांग की है कि बड़े वेतन को लागू

करने का शासनादेश तत्काल जारी कर स्थिति स्पष्ट की जाए। सबसे बड़ा सवाल - पुरानी दर या नई दर? विनोद इलाहाबादी ने कहा कि कई विभागों में १1 अगस्त से १0 सितंबर तक की अवधि का वेतन तैयार होना है। शासनादेश न होने से यह स्पष्ट नहीं है कि वेतन पुरानी दर से बनेगा या संशोधित बृद्धि हुई दर से। विभागीय अधिकारी भी इस पर कोई जवाब नहीं दे पा रहे हैं। मुख्य बिंदु - 1. शासनादेश में से पूरी स्पष्टता: शासनादेश में केवल वेतन वृद्धि से नहीं, बल्कि वेतन लागू

होने की प्रभावी तिथि और नई वेतन दरों का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए। १. ईपीएफओ-ईएसआईसी पर स्थिति साफ हो: वेतन से कटने वाले ईपीएफओ और ईएसआईसी श्रंदाइन का प्रतिशत और सामाजिक सुरक्षा लाभों की पूरी जानकारी शासनादेश में शामिल की जाए। वर्तमान में ईपीएफओ की सीमा 15 हजार रुपये है, जिसे भारत सरकार द्वारा १5 हजार रुपये करने की घोषणा की गई है, पर इस पर भी दिशा-निर्देश लंबित है। ३. लाखों परिवारों से जुड़ा मामला: प्रदेश के लाखों आउटसोर्सिंग कर्मिक लंबे समय से वेतन और सामाजिक सुरक्षा के स्पष्ट नियमों का इंतजार कर रहे हैं। सरकार को ब्रम खरब कर समयबद्ध लाभ देना चाहिए। श्री इलाहाबादी ने आग्रह किया कि सरकार जनहित में तत्काल शासनादेश जारी कर ईपीएफओ, ईएसआईसी, वेतन की प्रभावी तिथि और संशोधित दरों को स्पष्ट करे, ताकि कर्मचारियों को बड़े वेतन का लाभ बिना किसी देरी के मिल सके।

राजा सरायकेला की अध्यक्षता में दुर्गा पूजा हेतु कमिटी गठन

जहां उत्कलीय परंपरा अनुसार होती है 16 दिनों तक दुर्गा पूजा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची , उत्कलीय परंपरा अनुसार राजमहल सरायकेला प्राणंग स्थित ऐतिहासिक पब्लिक दुर्गा पूजा हेतु एक कमिटी का गठन राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव की अध्यक्षता में की गयी ।कभी उस उत्कल का अंग रहा यह माटी जहां चेदी वंश के राजा सुरथ आप शाह रहे ।, आप ने मां दुर्गा की सर्वप्रथम पूजा आरंभ की थी ।दुर्गा सप्तशती यानी चंडी में ऋषि मार्कण्डेय ने उन्हें ही अपने उस महान ग्रन्थ मे नायक माना है ।

उसी जगन्नाथ के सोलह कला नगरी यानी सरायकेला जो अतीत में ओडिशा का अंश में उत्तर कलिंग नामित रहा इस शक्ति पर्व को बताए परंपरा व मार्ग के अनुसार मनाने हेतु पूजा की तैयारियों, धार्मिक अनुष्ठानों, मला एवं विधि-व्यवस्था हेतु विस्तार से चर्चा की गई ।सनद रहे कि सरायकेला में आज भी इस पूजा का खास महत्व रहता है ।

नई कमिटी में अध्यक्ष राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव, उपाध्यक्ष गोकुल बिहारी पति, श्रीधर सिंहदेव एवं बाँबी



सिंहदेव, सचिव पप्पू सामंत, सह सचिव देवराज सिंहदेव, पवन कबी एवं तपन कामिला, कोषाध्यक्ष सुभम दास, सह कोषाध्यक्ष शम्भू पटनायक, शत्रुघ्न दास एवं भीष्म केवर्त को बनाया गया । सांस्कृतिक सचिव रुपेश साहू एवं देवदत्त महंती तथा सह सांस्कृतिक सचिव राजेश आचार्य, मनोज पटनायक एवं शिवचरण साहू चुने गए । वहीं मुख्य मेला कंट्रोलर की जिम्मेदारी राजीव रथ को सौंपी गई ।

कमिटी के कोषाध्यक्ष पप्पू सामंत ने गत वर्ष की आय-व्यय का ब्योरा प्रस्तुत किया । तांत्रिक मतानुसार आयोजित होने वाली सरायकेला की लगभग चार सौ वर्ष पुरानी ऐतिहासिक पब्लिक दुर्गा पूजा को पूरे विधि-विधान एवं परंपरा के साथ संपन्न कराने के लिए सर्वसम्मति से नई पूजा कमिटी का पुनर्गठन किया गया ।

राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव जिनके पूर्वजों इस मंदिर की स्थापना की

उत्कलीय सैन्य सामंत , उनके रिवाज धारक उन्होंने कहा कि सरायकेला की ऐतिहासिक दुर्गापूजा हमारी धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत है । इसे परंपरा और आस्था के अनुरूप भव्य स्वरूप देना सभी की सामूहिक ज़िम्मेदारी है । यह जानने योग्य बात है कि सरायकेला में दुर्गा पूजा 16 दिनों तक चलता है , जो उत्कलीय परंपरा अनुसार सोलह पूजा कहलाता । यह विशुद्ध जगन्नाथ पुरी में बैठी उनकी भैरवी विमला के लिए जिस

प्रकार पूजा होती है ठीक उसी प्रकार तांत्रिक रिवाज से आज भी सरायकेला में होती यहां की पूजा ।

बैठक में नीलाम्बर सिंहदेव, मुख्य पुजारी नीलकंठ सरंगी, राज ज्योतिषी तपन त्रिपाठी, पुजारी देवी प्रसन्न सरंगी, तपन पटनायक, संजीव पति, काशीनाथ कर, सुमित सिंहदेव, छोटू सिंह, संजय सिंहदेव, रजतेन्दु रथ, गंभीर सिंह, रश्मिण महतो सहित कई गणमान्य एवं भक्तगण उपस्थित थे ।

नहीं रही झारखंड की पूर्व मंत्री विमला प्रधान

ओडिशा समुदाय से रही विमला प्रधान, मुख्यमंत्री झारखंड ने दी श्रद्धांजलि

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची , झारखंड के सिमडेगा की राजनीति को लंबे समय तक दिशा देने वाली पूर्व विधायक एवं मंत्री विमला प्रधान का शुक्रवार रात्रि करीब 8:40 बजे रांची के निजी अस्पताल में निधन हो गया.

बताया गया कि तबीयत बिगड़ने के बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहां शुक्रवार रात करीब 8:40 बजे उन्होंने अंतिम सांस ली. उनके निधन की खबर मिलते ही सिमडेगा के राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गयी. मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने उनके आवास पर पहुंचकर दी श्रद्धांजलि ।

विमला प्रधान ने 2009 में झारखंड के टिकट पर सिमडेगा विधानसभा सीट से पहली बार जीत दर्ज कर राजनीतिक सफर में महत्वपूर्ण मुकाम हासिल किया. वर्ष 2014 में उन्होंने लगातार दूसरी बार विधानसभा चुनाव जीता. वर्ष 2009 से 2019 तक



वह सिमडेगा विधानसभा क्षेत्र की विधायक रहीं.

विधायक कार्यकाल के दौरान उन्हें झारखंड सरकार में समाज कल्याण, महिला एवं बाल विकास तथा पर्यटन विभाग की जिम्मेदारी मिली. मंत्री के रूप में उन्होंने राज्य सरकार में महत्वपूर्ण दायित्व संभाला ।वर्ष 2017 में उन्हें उत्कृष्ट विधायक सम्मान से भी नवाजा गया. करीब एक दशक तक विधानसभा में सिमडेगा का प्रतिनिधित्व करने वाली विमला प्रधान की पहचान क्षेत्र की प्रमुख महिला जनप्रतिनिधि के रूप में रहीं.

वर्ष 2019 में भाजपा ने उन्हें विधानसभा चुनाव में प्रत्याशी नहीं बनाया लेकिन सार्वजनिक जीवन में उनकी सक्रियता हमेशा बनी रहीं. उनके निधन की खबर से समर्थकों, शुभचिंतकों और

राजनीतिक कार्यकर्ताओं में शोक व्याप्त है. लोगों ने उनके लंबे राजनीतिक जीवन और सिमडेगा के लिए किए गए कार्यों को याद करते हुए श्रद्धांजलि दी. उनके निधन को सिमडेगा के राजनीतिक जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण अध्याय का अंत बताया जा रहा है. पूर्व मंत्री विमला प्रधान के पति की मृत्यु पूर्व में हो चुकी थी. इनके तीन पुत्र हैं, जिसमें पहले पुत्र का नाम मनीष प्रधान, दूसरे का राकेश रविकांत एवं तीसरे का नाम गुड्डू हैं. पहला पुत्र मनीष प्रधान न्यायपालिका में अपनी सेवा दे रहे हैं. वहीं दूसरे पुत्र राकेश रविकांत अपनी मां से प्रेरणा ग्रहण कर भारतीय जनता पार्टी से जुड़कर काम कर रहे हैं.

उधर आज मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने विमला प्रधान के आवास पहुंचकर उनके पार्थिव शरीर पर



पुष्पचक्र अर्पित कर श्रद्धांजलि दी और शोकाकुल परिजनों से मुलाकात कर संवेदना व्यक्त की. मुख्यमंत्री ने कहा कि विमला प्रधान का निधन झारखंड की राजनीति के लिए अपूरणीय क्षति है. सार्वजनिक जीवन में उनका योगदान और जनता के प्रति उनका समर्पण सदैव स्मरणीय रहेगा । उन्होंने सिमडेगा सहित पूरे झारखंड के विकास में उनकी भूमिका को भी याद किया. हेमंत सोरेन ने मरांग बुरु से दिवंगत आत्मा की शांति तथा शोकाकुल परिवार, समर्थकों और शुभचिंतकों को इस कठिन समय में शक्ति एवं संबल प्रदान करने की प्रार्थना की ।

भारत की इलेक्ट्रिक मोबिलिटी परिवर्तन में ‘फ्रंट रनर’ के रूप में ओडिशा



बड़े राज्यों के बीच आईईएमआई में ओडिशा का उल्लेखनीय प्रदर्शन

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर :भारत के इलेक्ट्रिक मोबिलिटी क्षेत्र में ओडिशा ने एक अग्रणी राज्य के रूप में अपनी स्थिति को और मजबूत किया है । नीति आयोग द्वारा 16 सितंबर 2026 को नई दिल्ली में आयोजित राज्य ईवी नीति समीक्षा एवं पुनर्संरखण बैठक में जारी ईईडयन इलेक्ट्रिक मोबिलिटी इंडेक्स (आईईएमआई) 2025 में ओडिशा ने बड़े राज्यों के बीच ‘फ्रंट रनर’ श्रेणी में स्थान हासिल किया है । इस सूचकांक में ओडिशा ने 55 अंक प्राप्त किए हैं । शहरी परिवहन से विशेष रूप से जुड़े परिवहन विद्युतीकरण की प्रगति में राज्य ने 58 अंक और चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की तैयारी में 57 अंक हासिल किए हैं । दोनों क्षेत्रों में ओडिशा ‘फ्रंट रनर’ श्रेणी में शामिल है । स्क्वड सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने, इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को बढ़ाने और चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर के विस्तार की दिशा में

राज्य के निरंतर प्रयासों का यह परिणाम है । आईईएमआई 2024 की तुलना में भी ओडिशा ने उल्लेखनीय प्रगति की है । वर्ष 2024 में राज्य का स्कोर 49 था और राष्ट्रीय स्तर पर ओडिशा 7वें स्थान पर था । गृह एवं नगर विकास मंत्री डॉ. कृष्ण चंद्र महापात्र ने कहा, “भारतीय इलेक्ट्रिक मोबिलिटी इंडेक्स में ओडिशा को ‘फ्रंट रनर’ के रूप में मान्यता मिलना स्क्वड, हरित और भविष्य उन्मुख परिवहन व्यवस्था के निर्माण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतिबिंब है । इलेक्ट्रिक सार्वजनिक परिवहन के विस्तार, चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने तथा व्यापक इलेक्ट्रिक मोबिलिटी के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करने की दिशा में हम लगातार काम कर रहे हैं । इस इलेक्ट्रिक मोबिलिटी परिवर्तन के माध्यम से स्क्वड हवा, बेहतर शहरी परिवहन और एक टिकाऊ ओडिशा के निर्माण में योगदान देना हमारा प्रमुख लक्ष्य है । यह मान्यता ओडिशा विजन 2047 के लक्ष्यों के अनुरूप है । इस विजन में स्क्वड ऊर्जा और अभिनव मोबिलिटी समाधानों पर आधारित एक

टिकाऊ, जलवायु-सहिष्णु और भविष्य उन्मुख परिवहन व्यवस्था की परिकल्पना की गई है । कार्बन उत्सर्जन में कमी, शहरी वायु गुणवत्ता में सुधार तथा एक कुशल, सुगम और पर्यावरण अनुकूल परिवहन नेटवर्क के निर्माण की दिशा में ओडिशा अपने प्रयासों को और मजबूत कर रहा है । क्रुट (CRUT) के प्रबंध निदेशक मोहम्मद सकिद आलम ने कहा, “यह मान्यता सार्वजनिक परिवहन के विद्युतीकरण में तेजी लाने की दिशा में ओडिशा के निरंतर प्रतिबद्धता को और मजबूती प्रदान करती है । इलेक्ट्रिक बस सेवाओं, चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर और डिजिटल मोबिलिटी समाधानों के विस्तार के माध्यम से सार्वजनिक परिवहन को अधिक स्क्वड, कुशल और नागरिकों के लिए सुगम बनाने की दिशा में हम काम कर रहे हैं ।” इलेक्ट्रिक मोबिलिटी, चार्जिंग परिवहन के क्षेत्र में निरंतर निवेश के साथ-हमारा प्रमुख लक्ष्य है । यह मान्यता ओडिशा विकास को समर्थन देने वाली अनुकूल नीतियों के माध्यम से इस प्रगति को आगे बढ़ाने के लिए ओडिशा सरकार प्रतिबद्ध है ।

सेवा पखवाड़ा में युवाओं की आवाज बनी डिबेट, विद्यार्थियों ने रखे बेबाक विचार

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक गयाजी

भारतीय जनता पार्टी द्वारा आयोजित सेवा पखवाड़ा के तहत अनीश पंजक मेमोरियल विधि कॉलेज में छात्र-छात्राओं के बीच एशियाई पार्लियामेंटी डिबेट प्रतियोगिता आयोजित की गई । कार्यक्रम में मुख्य अतिथि भाजपा नेता डॉ. मनीष पंजक मिश्रा उपस्थित थे । कॉलेज प्रबंधन की ओर से उन्हें अंगवस्त्र, पुष्पगुच्छ एवं स्मृति विहन देकर सम्मानित किया गया ।

प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने देश के विकास, युवाओं की भूमिका, लोकतंत्र,

राष्ट्र निर्माण तथा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सार्वजनिक जीवन के 25 वर्षों से जुड़े विषयों पर तर्क एवं तथ्यों के साथ अपने विचार प्रस्तुत किए । डॉ. मनीष पंजक मिश्रा ने कहा कि डिबेट जैसी प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों में तर्क क्षमता, आत्मविश्वास और नेतृत्व कौशल विकसित करती हैं । उन्होंने युवाओं से सामाजिक जिम्मेदारियों के साथ राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान किया ।

कार्यक्रम में रवि कुमार, स्नेहा, अनुराधा, प्रीतम, सत्य प्रतीक, सा आलम, मनीष कुमार, नितेश कुमार, शालू कुमारी, पंजक कुमार, शुभम



कुमार, गौतम कुमार, गौरव कुमार, ज्योति कुमारी, मुस्कान, रूही सिंह एवं

लोकतंत्र से राष्ट्र निर्माण तक, विद्यार्थियों ने डिबेट में रखे प्रभावशाली विचार

सैर उत्सव में गुंजा हिमाचली संस्कृति का जयघोष: विपक्ष के नेता जय राम ठाकुर ने प्रवासी हिमाचलियों से दिल में हिमाचल बनाए रखने का आह्वान किया

शाह ऑडिटोरियम में हिमाचल मण्डी जनकल्याण सभा दिल्ली का भव्य आयोजन, मेधावी हिमाचलियों का सम्मान, सभा को 51 हजार की आर्थिक सहायता की घोषणा

विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र हिमाचल मण्डी जनकल्याण सभा (संजीकृत), दिल्ली द्वारा आयोजित सैर उत्सव के अवसर पर आर्य शाह ऑडिटोरियम, नई दिल्ली में हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री एवं नेता प्रतिपक्ष ठाकुर जय राम ठाकुर की सम्मानित किया गया । इस अवसर पर उन्होंने प्रवासी हिमाचलियों से अपने गूल राज्य, संस्कृति और पर्यावरण से गानावाकल रूप से जुड़े रहने का आह्वान किया ।

हिमाचल मण्डी जनकल्याण सभा द्वारा आयोजित सैर उत्सव को संबोधित करते हुए नेता प्रतिपक्ष श्री जय राम ठाकुर ने कहा कि गहनवनों में बसी हिमाचली संस्थाओं ने हर संकट में हिमाचल का साथ दिया है । उन्होंने कहा कि कोटिक-19 महामारी के दौरान देश के दिग्विभ्र गणों से लगभग 2.5 लाख हिमाचली अपने घर लौटे थे । इस कठिन समय में दिल्ली स्थित हिमाचली सभाओं ने प्रवासियों के लिए ठहरने, भोजन और उन्हें उनके गांव तक सुरक्षित पहुंचाने में सराफवीय कार्य किया । पिछले वर्ष गानावाकल के दौरान आई भीषण बाढ़ और प्राकृतिक आपदा का भ्रिक करते हुए उन्होंने कहा कि इन संस्थाओं ने उनके विधानसभा क्षेत्र सिराज सखित राज्य के दूर-दराज क्षेत्रों में रहत शक्तिर लगाकर प्रभावित लोगों की मदद की, जो ब्याई के पात्र है । संस्था द्वारा दूर-दराज क्षेत्रों में लगाए जा रहे स्वास्थ्य शिविरों की साराफा करते हुए उन्होंने हर संभव सहायता का आश्वासन दिया ।

श्री ठाकुर ने कहा कि प्रवासी हिमाचली व्यापार, रोजगार और हर क्षेत्र में आगे बढ़े, लेकिन हिमाचल को अपने दिल में बनाए रखें । उन्होंने कहा कि प्रत्येक हिमाचली को

अपनी संस्कृति, सभ्यता और पर्यावरण को अक्षुण्ण रखते हुए हिमाचल का एम्बेस्सर बनकर कार्य करना चाहिए, ताकि पूरे देश में प्रदेश की विशिष्ट पहचान बने । इस अवसर पर उन्होंने सभा को अपनी छैलकत निधि से 51,000 रुपये की धराशायि देने की घोषणा की । कार्यक्रम के अन्त्य मुख्य बिंदु: 1. पूर्व विधानसभा अध्यक्ष का संबोधन: इस अवसर पर हिमाचली लोक संस्कृति पर आधारित रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, जिसने दर्शकों को अंग्रेजकृष्ण कद दिया ।

क्षेत्र में उत्तरेखनीय प्रगति की है । उन्होंने कहा कि पूर्ण राखतव प्राप्त करने के बाद हिमाचल ने देश के गानावाकल पर अपनी साराफत अखिरिती दर्ज की है । १. सभा की प्रमुख गण: सभा के अध्यक्ष श्री के. आर. दर्मा ने सरकार से गाना की कि गहनवनों में बसे प्रवासी हिमाचलियों के बच्चों को ऑडिटर कौशल और अन्य व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में हिमाचल के छात्रों के समान अवसर दिया जाए । दर्मान ने उन्हें बाहरी छात्र माना जाता है जिससे उन्हें कूडा पैदा होती है । उन्होंने प्रवासी छात्रों के लिए ५ प्रतिशत सीटें आरक्षित करने का आग्रह किया । ३. सम्मान एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम: कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले हिमाचली प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया । इस अवसर पर हिमाचली लोक संस्कृति पर आधारित रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, जिसने दर्शकों को अंग्रेजकृष्ण कद दिया ।